आधुनिक विश्व का इतिहास

विषय सूची

1. पुनर्जागरण _____ 2-8

2. धर्म सुधार आन्दोलन _____ 9-15

3. अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम _____ 16-21

4. फ्रांस की क्रांति - 1789 _____ 22-28

5. नेपोलियन _____ 29-35

6. औद्योगिक क्रांति _____ 36-40

7. उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद _____ 41-45

8. प्रथम विश्वयुद्ध _____ 46-48

9. प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति एवं शान्ति सन्धियाँ _____ 49-51

10. द्वितीय विश्वयुद्ध _____ 52-54

1 पुनर्जागरण

परिभाषा

14^{th} – 16^{th} शताब्दी के दौरान यूरोप में कला एवं साहित्य के क्षेत्र में मानव केन्द्रित प्रवृत्तियों से युक्त एक बौद्धिक आंदोलन शुरू हुआ जो प्राचीन सभ्यताओं से प्रेरित था पुनर्जागरण कहलाया।

पुनर्जागरण की विशेषताएँ/प्रकृति

(i) यह प्राचीन रोमन व ग्रीक सभ्यताओं से प्रेरित था।

(ii) यह प्रगतिशील था ।

(iii) इसने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया।
इसका सर्वाधिक प्रभाव कला और साहित्य के क्षेत्र में दिखाई दिया।

(iv) यह शहरी क्षेत्रों से प्रारंभ हुआ था।
अतः इसकी प्रकृति शहरी थी।

(v) यह धर्म निरपेक्ष प्रकृतियों से युक्त था।

(vi) यह अंधविश्वासों और रूढ़िवादिता का विरोधी था।

(vii) इसने अन्वेषण और आलोचना की प्रवृत्तियों को जन्म दिया।

(viii) इसने तार्किकता को महत्व दिया, जो कि "**स्वतंत्र-चिंतन**" का आधार बनी।

(ix) इसने सभी विचारों का केन्द्र मनुष्य को बनाया।

(x) यह मानव जीवन के उन्नयन का स्रोत था।

पुनर्जागरण के कारण

1. धर्मयुद्ध (Crusade)

11वीं – 13वीं सदी

ईसाई-इस्लाम

सेल्जुक तुर्क

जेरूसलम पर अधिकार के लिए युद्ध

धर्मयुद्ध का प्रभाव

(1) अरब एवं यूरोप के बीच सम्पर्क।

(2) यूरोप को नई जानकारी प्राप्त हुई।

(i) अंकपद्धति

(ii) बीजगणित

(iii) अरस्तू के ग्रंथ

(iv) कागज

(v) कम्पास – दिशा मापक यंत्र

(vi) लम्बी भौगोलिक यात्राओं के कारण यूरोपीय लोगों का मानसिक क्षितिज विकसित हुआ।

2. आर्थिक कारण

अरबों के सम्पर्क के कारण यूरोप में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी ।इन आर्थिक गतिविधियों ने पुनर्जागरण के उदय में 4 प्रकार से योगदान दिया।

(i) इस समय अनेक व्यापारी अरब एवं एशिया माइनर के क्षेत्रों में बस गए तथा ये अपने साथ नये विचार एवं प्रगतिशील तत्व लेकर आए।

(ii) यूरोप में अनेक नये शहरों का विकास हुआ।
जैसे- वेनिस, मिलान, फ्लोरेंस आदि।
ये शहर नये विचारों के वाहक बने तथा यहाँ ''विचार स्वतंत्रता को आश्रय'' मिला।

(iii) यूरोप का व्यापारी वर्ग समृद्ध हुआ तथा इसे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।
और अब यह अरब के पुस्तकालयों (बगदाद, काहिरा, कार्डोका आदि) में संचित ज्ञान के सम्पर्क में आया।

(iv) चर्च ब्याज प्रथा को पाप मानता था इसलिए व्यापारी वर्ग द्वारा आलोचना के माध्यम से इसके महत्व को कम करने का प्रयास किया गया।

3. महान-मंगोल साम्राज्य का उदय

- 13वीं शताब्दी में कुबलई खान ने महान मंगोल साम्राज्य की स्थापना की।
- इसके राज्य की सीमाएँ यूरोप तक विस्तृत हुई।
- इसका दरबार अनेक विद्वानों, कलाकारों एवं धर्म प्रचारकों का केन्द्र था।
- इसके दरबार की भव्यता का वर्णन मार्को पोलो ने अपनी पुस्तक "ट्रेवल्स ऑफ मार्को पोलो" में किया।
- मंगोलों से यूरोप को 3 नई जानकारियाँ प्राप्त हुई-
  (i) कम्पास या कुतुबनुमा
  (ii) बारूद
  (iii) कागज तथा मुद्रण (Printing)

4. कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार [1453 ईस्वी]

(1) कुस्तुनतुनिया में प्राचीन रोमन साम्राज्य के अवशेष सुरक्षित थे-
- जब यहाँ तुर्कों का अधिकार हुआ तो उनके विद्वान एवं कलाकार तुर्कों के अत्याचारों से बचने के लिए पश्चिमी यूरोप चले गए।
- ये अपने साथ प्राचीन ज्ञान एवं नवीन चिंतन प्रणाली लेकर पहुँचे।
- अकेल कार्डिनल बेसारियोन 800 पाण्डुलिपियाँ लेकर इटली पहुँचा।

(2) कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों के अधिकार के कारण एशिया व यूरोप के मध्य के व्यापारिक मार्ग अवरूद्ध हो गये।
इससे यूरोप में पूर्व से आने वाली काली मिर्च व विलासिता का वस्तुओं की कमी हो गयी।
- अब पश्चिमी यूरोप में एशिया के लिए नए जलमार्गो की खोज की आवश्यकता महसूस की गई।
- इसका परिणाम था कि 'वास्को-डी-गामा' ने भारत के लिए नये जलमार्ग की खोज की। तथा कोलम्बस अमेरिका पहुँच गया।

5. वैज्ञानिक आविष्कार

- गुटेनबर्ग ने **मुद्रण यंत्र** का आविष्कार किया तथा 1477 ईस्वी में कैक्सटन ने "पहले छापखाने" की स्थापना की।
- इस आविष्कार से साहित्य सस्ता एवं सुलभ हो गया।
- अब किताबों में ऐसा लिखा है कहकर लोगों को बेवकूफ बनाना आसान नहीं रहा।
- साहित्य के प्रसार से अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता दूर हुई। तथा लोगों का आत्मविश्वास बढ़ा।

पुनर्जागरण के प्रभाव

1. साहित्य पर प्रभाव

		पहले	बाद में
(i)	लेखक	पादरी वर्ग	जनसामान्य
(ii)	विषय वस्तु	धार्मिक थी।	मानवीय भावनाओं, समस्याओं एवं वेदनाओं आदि को अपनाया गया। अब साहित्य आलोचना, प्रधान, मानववादी और व्यक्तिवादी हो गया। आस्था एवं परम्परा की जगह तार्किकता ने ले ली।
(iii)	भाषा	लेटिन (मुख्यतया) एवं यूनानी (ग्रीक)	बोलचाल की भाषाओं में साहित्य की रचना। प्रादेशिक भाषाओं का विकास- **जैसे-** इटालियन, डच, फ्रेंच, स्पेनिश, इंग्लिश, जर्मन आदि।
(iv)	शैली	पद्य	गद्य कला महत्वपूर्ण साहित्य विधा के रूप में उभरी।

(1) इतालवी साहित्य

साहित्यकार

(i) दाँते

(a) डिवाइन कॉमेडी

(b) वीतानोआ (नया जीवन)

(c) द मोनार्किया

(ii) पेट्रार्क

- 'मानववाद का जनक'
- यह एक जीवनी लेखक था
- इसके पत्रों का संकलन - ''लेटर्स ऑन फेमिलियर मेटर्स''।

(iii) फिसिनो

प्लेटों के दर्शन का अध्ययन किया।

(iv) मैकियावली

रचना - ''द प्रिंस''

विषय वस्तु – राजनीतिक

(v) बुकासियो

रचना – डिकेमेरान

''इतालवी गद्य का जनक''

(vi) मार्सिलियो

''द डिफेन्डर ऑफ द पीस''

विषय वस्तु - राजनीतिक

(2) फ्रांसीसी साहित्य

(i) रेबेलास

''केवल मनुष्य ही हँस सकता है'' इसका प्रसिद्ध कथन था।

रचना - ''पेन्टाग्रुएल और गारगैंतुआ''

(ii) मोताइन्ये

यह एक ''निबन्धकार'' था।

इसने प्रथम आधुनिक मनुष्य की उपाधि अर्जित की।

(3) अंग्रेजी साहित्य

(i) चौसर

बुक – ''केन्टरबरी टेल्स''

लोक कथाओं को साहित्यक रूप दिया गया।

इसमें रूढ़ियों पर व्यंग्य किया गया है।

(ii) टॉमस मूर

बुक – ''यूटोपिया''

इसमें भविष्य के आदर्श समाज का उल्लेख किया गया था।

(iii) विलियम शेक्सपियर

रचना

- मैकबेथ
- हेमलेट
- ओथेलो
- किंग लियर
- रोमियो और जूलियट
- द मर्चेण्ट ऑफ वेनिस

(4) डच साहित्य

इरेस्मस – (बुक – "इन द प्रेज फॉली" – मूर्खता की प्रशंसा)

यह व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई थी।

(5) स्पेनिश साहित्य

सर्वेन्टीज – बुक - "डॉन क्विकजोट"

2. कला पर प्रभाव

(1) स्थापत्य कला

	पहले (पुनजार्गरण से)	**बाद में**
(i)	गोथिक शैली (बर्बर शैली)	शास्त्रीय शैली
(ii)	विशेषताएँ	विशेषताएँ
	• नुकीले मेहराब	वृत्ताकार मेहराब
	• अर्द्ध गुम्बद	विशाल गुम्बद
	• सघन अलंकरण	अलंकृत स्तम्भ

- इस समय धार्मिक और गैर-धार्मिक दोनों प्रकार की इमारतो को संरक्षण मिला।
- फ्लोरेंस के मेडिची परिवार व मिलान के स्पोरजास परिवार ने स्थापत्य को संरक्षण दिया।

प्रमुख वास्तुकार

(i) ब्रूनेलेशी

(ii) पालादिओन

(iii) माइकल एंजेलो

(iv) राफेल

उदाहरण :

(पुनर्जागरण कालीन वास्तुकला के महत्ववपूर्ण)

(i) शातो – (फ्रांस के लुआर प्रान्त में बने सामन्तों के निवास)

(ii) रोम का सेण्टपीटर चर्च

(iii) पेरिस का लूब्रे पैलेस

(iv) स्पेन का इस्कोरियल पैलेस

(2) मूर्तिकला

पहले विषय वस्तु धार्मिक थी। अब धर्मेतर विषयों पर भी मूर्तियों बनने लगी थी।

प्रमुख मूर्तिकार

(i) दोनातेल्लो

बच्चों की मूर्तियाँ बनाता था।

(ii) लारेन्जो गिबर्ती

इनके द्वारा निर्मित मूर्तियाँ फ्लोरेंस के चर्च के दरवाजे पर निर्मित है।

(iii) माइकल एंजेलो

इसने 400 से अधिक मूर्तियों का निर्माण किया।

- डेविड की मूर्ति
- पेतां की मूर्ति

(3) चित्रकला पर प्रभाव

	पहले (पुनजार्गरण से)	**बाद में**
(i)	विषय वस्तु-धार्मिक	विषय वस्तु में मानवजीवन, संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं सौन्दर्य बोध को शामिल किया गया।
(ii)	चित्र कागज या लकड़ी पर बनाये जाते थे।	चित्र अब कैनवास पर बनने लगे।
(iii)	सादगीपूर्ण रंगों का प्रयोग किया जाता था तथा अनुशासन का विशेष ध्यान रखा जाता था। (चित्रों में अनुशासन)	चमकीले एवं चटकीलें रंगों का प्रयोग किया गया तथा तैलीय चित्रों का निर्माण किया जाने लागा।

प्रमुख चित्रकार

(i) जियोटो

''आधुनिक चित्रकला का जनक''

पहली बार कैनवास पर चित्र बनाये।

(ii) लियोनार्दो द विंची (कम्पलीट मैन)

प्रमुख चित्र

- मोनालिसा
- द लास्ट सपर (मिलान चर्च में)

(iii) माइकल एंजेलो

चित्र-द लास्ट जजमेण्ट $\Rightarrow$ रोम में (सिस्टाइन चैपल चर्च)

(iv) राफेल

चित्र - ''मेडोना'' - दिव्य नारीत्व का प्रदर्शन

विशेषता – समरूपता व शारीरिक सौष्ठव इनके चित्रों की प्रमुख विशेषता।

(v) मेशेशियो

इसके चित्रों की प्रमुख विशेषता परिप्रेक्ष्य प्रभाव था।

परिप्रेक्ष्य - कौन आगे है कौन पीछे वाला प्रभाव इसकी चित्रों में दिखाया गया है।

(vi) वान आइक ब्रदर्स (बन्धु) (बेल्जियम)

इन्होंने ऑयल चित्रकारी (oil painting) की शुरूआत की।

(4) संगीत के क्षेत्र में प्रभाव

- पियानो व वायलिन का आविष्कार हुआ।
- ओपेरा संगीत की शुरूआत हुई।
- पेलेस्चीयन ने सामूहिक गीतों की पुस्तक "मोजेज" लिखी।
- मस्किनस इस समय का महान संगीतकार था।

3. विचारधारा पर प्रभाव

- अब तक ईश्वर को केन्द्र में रखकर धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप जो सामाजिक व नैतिक निर्णय किये जाते थे, अब उनके स्थान पर चिन्तन का केन्द्र मनुष्य को बनाया गया।
- इससे एक नई विचारधारा "मानववाद" का विकास हुआ।
- मानववाद का उद्देश्य मानव जीवन को सुखी व सुविधापूर्ण बनाना था।
- इसने मानव के सम्मान एवं महत्व पर बल दिया।
- मानववाद ने आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकवाद, पारलौकिकता के स्थान पर इहलौकिकता, आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद, अंधविश्वास एवं रूढ़ियों के स्थान पर तर्कसंगतता, सम्पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता को रखा।

4. राजनैतिक प्रभाव

(i) पुनर्जागरण के कारण "मध्यम वर्ग" का उदय हुआ तथा "क्षेत्रीय भाषाओं" का विकास हुआ।
इससे ''राष्ट्र राज्यों'' का विकास/उदय हुआ।

(ii) राष्ट्र राज्य के शक्तिशाली होने के कारण 'सामन्तवाद' का पतन हुआ। तथा चर्च का वर्चस्व समाप्त हुआ।

5. विज्ञान पर प्रभाव

(1) खगोलशास्त्र (Astronomy)

पुनर्जागरण से पहले – टॉलमी का सिद्धान्त
पृथ्वी सम्पूर्ण ब्रह्माड का केन्द्र है।
पुनर्जागरण के बाद – कॉपरनिकस (Book – The Revolutionibus (परिभ्रमण))
सिद्धांत – सूर्य केन्द्रित सिद्धांत।
केप्लर : Book – "खगोलीय रहस्य" (Consmographical Mystry)
ग्रहों की गति के नियम बताये।
गैलिलियों : Book – "गति" (The Motion)
इसने ''दूरबीन'' का आविष्कार किया।
इसने "पेण्डूलम" का आवष्किार किया।

(2) चिकित्सा विज्ञान

(i) फ्राकास्टोरो – इसने सूक्ष्मजीवों को बीमारियों का कारण माना।
(ii) रोजर बेकन – सूक्ष्मदर्शी यंत्र का आविष्कारक।
(iii) वेसेलियस – मानव शरीर की रचना नामक पुस्तक लिखी।
(iv) विलियम हार्वे – रक्त परिसंचरण तंत्र की खोज की।

6. धार्मिक प्रभाव

धर्म सुधार आन्दोलन

पुनर्जागरण इटली से ही क्यों शुरू हुआ?

1. ऐतिहासिक कारण

इटली प्राचीन रोमन सभ्यता की ''जन्मस्थली'' थी।

2. राजनैतिक कारण

इटली में सामन्तवाद कमजोर था। क्योंकि इटली का नागरिक व योद्धा वर्ग सशक्त था, इन्होंने सामन्तों को प्रांतों में नहीं टिकने दिया।

इटली के नगरों में मध्यम वर्ग प्रभावशाली था, इसलिए यहाँ भी सामन्तवाद का ढाँचा सशक्त नहीं था। इसलिए नवीन मान्यताओं को आश्रय मिला।

3. **भौगोलिक स्थिति**

धर्मयोद्धा वापस लौटते समय इटली में ठहरते थे और अरब संस्कृति का अनुभव यहाँ साझा करते थे।

कस्तुनतुनिया पर जब तुर्कों ने आक्रमण किया, तो वहाँ से अधिकत्तर विद्वान इटली पहुँच गये।

4. **आर्थिक कारण**

इटली की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार थी, कि पूर्वी देशों व यूरोप के मध्य होने वाले व्यापार का बहुत बड़ा भाग इटली से होता था।

(i) यहाँ नगरों का विकास हुआ।

(ii) नगरों में पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ, इसने कला और कलाकारों को संरक्षण दिया।

(iii) व्यापारिक समृद्धि के कारण इटली की शिक्षा व्यवस्था उदार व बहुआयामी थी।

(iv) इटली का विदेशी संस्कृतियों से सम्पर्क अधिक था। इससे परम्परागत संकीर्णता से बचाव हुआ।

5. **धार्मिक कारण**

पोप का केन्द्र रोम था यद्यपि अधिकतर पोप प्रतिक्रियावादी होते थे लेकिन कुछ उदारवादी भी होते थे, जिन्होंने शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों आदि की स्थापना की।

रेनेसा मैन [2 Marks]

वह व्यक्ति जिसकी अनेक रूचियाँ हो, तथा वह अनेक क्षेत्रों में पारंगत हो।

Example :

(15 शब्द सीमा लगभग)

(i) पुनर्जागरण से आप क्या समझते है?

(ii) मानव वाद से आप क्या समझते है?

(iii) चित्रकला पर पुनर्जागरण का प्रभाव ?

(50 शब्द सीमा लगभग)

(i) कला पर प्रभाव (पुनर्जागरण का) ?

(ii) साहित्य पर पुनर्जागरण का प्रभाव ?

(iii) पुनर्जागरण की प्रकृति/विशेषताए ?

(100 शब्द सीमा लगभग)

(i) पुनर्जागरण से आप क्या समझते है? इसका प्रभाव ?

(ii) पुनर्जागरण से आप क्या समझते है? इसका कारण ?

(iii) पुनर्जागरण से आप क्या समझते है? इसकी विशेषता ?

(iv) पुनर्जागरण इटली से प्रारंभ क्यों हुआ ?

(150 शब्द सीमा लगभग)

(i) पुनर्जागरण संसार तथा मानव की खोज ?

(ii) पुनर्जागरण धार्मिक और राजनीतिक आन्दोलन नहीं था, यह एक मनोदशा थी। स्पष्ट कीजिए?

2 धर्म सुधार आन्दोलन

परिभाषा

16वीं शताब्दी से पूर्व सम्पूर्ण यूरोपीय समाज धर्म केन्द्रित, धर्म प्रेरित और धर्म नियंत्रित था। किन्तु 16वीं शताब्दी में जर्मनी से शुरू होकर सम्पूर्ण यूरोप में प्रसारित धर्म सुधार रूपी चेतना ने धीरे-धीरे एक विस्तृत आन्दोलन का स्वरूप ग्रहण कर लिया जिसे 'धर्म सुधार आन्दोलन' के रूप में जाना जाता है।

धर्म सुधार आन्दोलन के कारण

1. पुनर्जागरण

पुनर्जागरण के परिणाम स्वरूप-

(i) स्वतंत्र चिंतन का विकास हुआ इसका आधार तार्किकता होती है, जो स्वभाव से ही अंधविश्वास व रूढ़ियों की विरोधी होती है।

(ii) **मानववाद** - एक मनुष्य केन्द्रित विचारधारा है, तथा स्वाभाविक रूप से इसकी प्रतिस्पर्धा ईश्वर केन्द्रित विचारधारा व धर्म से होती है।

इसलिये वे बाते जो मनुष्य के हित के विपरीत होती है, उन पर स्वतः प्रश्न उठने लगते हैं।

(iii) **राष्ट्रवाद की भावना** – यह भावना पोप की सर्वोच्चता के विरूद्ध प्रतिक्रिया का रूप ले लेती है।

(iv) भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहन मिला इससे यूरोप का नवीन धर्मों, संस्कृतियों एवं वर्गों से सम्पर्क स्थापित हुआ। इसने यूरोप के मानसिक क्षितिज को विस्तृत किया।

(v) **वैज्ञानिक आविष्कार हुए** - छापेखाने के आविष्कार ने साहित्य को सुलभ व सस्ता बना दिया था।

कॉपरनिकस ने सूर्य केन्द्रित विश्व की बात कहकर लोगों की सुषुप्त जिज्ञासाओं को जागृत कर दिया।

2. धार्मिक कारण

चर्च में भ्रष्टाचार के तरीके-

(i) **सिमानी** – चर्च के पदों एवं सेवाओं की बिक्री

(ii) **नेपोटिज्म** – चर्च के लाभकारी पदों का सम्बन्धियों के बीच बँटवारा।

(iii) **प्लुरेलिज्म** - एक पादरी द्वारा एक से अधिक पद ग्रहण करना।

(iv) **इण्डलजेन्स** – चर्च के द्वारा पैसे के बदले बाँटे जाने वाले क्षमापत्र।

- 15वीं - 16वीं शताब्दी तक आते-आते ईसाई धर्म आडम्बरों से युक्त हो गया तथा पतनोन्मुख हो चला।
- चर्च भ्रष्टाचार एवं विलासिता के केन्द्र बन गये।
- धर्माधिकारियों के शिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी।
- चर्च धन के केन्द्र बन गए थे ये विभिन्न प्रकार के करों के माध्यम से अपार संपदा का कोष बन गये थे।
- इन तमाम कमियों के बावजूद चर्च अपने आप में सुधार का कोई प्रयास नहीं कर रहा था।
- चर्च में आंतरिक सैद्धान्तिक फूट धर्म सुधार का सबसे प्रधान कारण था।
- रोमन कैथोलिक चर्च के अंदर ही कुछ असन्तुष्ट तत्वों ने चर्च का अभिभावकत्व स्वीकार नहीं किया।
- इन्होंने मनुष्य व ईश्वर के बीच प्रत्यक्ष संबंधों पर बल दिया व आस्थावानों की पुरोहिताई की बात की।

3. राजनैतिक कारण

यूरोप में पोप सर्वोच्च सत्ता के अंतर्राष्ट्रीय स्त्रोत के रूप में स्थापित है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय राज्यों का उदय हो रहा था। चर्च सभी राज्यों में नियुक्त धर्माधिकारियों के माध्यम से आंतरिक हस्तक्षेप कर रहा था एवं राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर रहा था।

चर्च न्यायिक एवं आर्थिक शक्तियाँ भी ग्रहण कर रहा था।

4. आर्थिक कारण

आर्थिक कारणों से भी इस समय-समाज के अनेक वर्ग चर्च का विरोध कर रहे थे।

(i) शासक

राष्ट्र राज्यों के उदय के कारण राजा को विशाल सेना व प्रशासन की आवश्यकता थी, इसके लिये उसे अतिरिक्त धन की आवश्यकता थी, लेकिन यह धन चर्च की तरफ जा रहा था तथा राजा के अनुसार यह धन उसके हिस्से का है।

(ii) सामान्य जनता

सामान्य जनता चर्च को अनेक प्रकार के कर दे रही थी।

जैसे- टीथे कर

लेकिन इसके बदले में जनता को कुछ भी नहीं मिल रहा था।

(iii) पूँजीपति वर्ग

पूँजीपति वर्ग चर्च की अनुत्पादक संपदा का विरोध कर रहा था।

मुद्रा की छोटी इकाई = पेन्स

(iv) सामान्य पादरी वर्ग

चर्च के द्वारा सामान्य पादरी वर्ग का भी शोषण किया जाता था। जिसका तरीका "फ्रूट ऑफ द फर्स्ट ईयर" और "पीटर्स पेन्स" था।

5. तात्कालिक कारण

"पोप लियों दशम" द्वारा 'इण्डलजेन्स' की बिक्री।

6. महान नेतृत्वकर्त्ता

इरेस्मस, मार्टिन लूथर, ज्विंगली, काल्विन (प्रोटेस्टेंट) इग्नेशियस लायोला (कैथोलिक) आदि प्रमुख धर्म सुधारक हुए।

आरम्भिक धर्म सुधारक

(i) जॉन वाइक्लिफ [1328 – 1384 ईस्वी]

- यह इंग्लैण्ड का निवासी था।
- इसने चर्च के भ्रष्ट आडम्बरो, तंत्र तथा पोप का विरोध किया।
- इसने ईसाई धर्म के वास्तविक सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करने का समर्थन किया एवं मध्यस्थों को अस्वीकार कर दिया।
- इसने चर्च की सम्पत्ति पर राज्य के अधिकार का समर्थन किया।
- इसके समर्थकों/अनुयायियों को ''लोलार्द'' कहा जाता था।
- इसे "दी मॉर्निंग स्टार ऑफ रिफॉर्मेशन" कहा जाता था।

(ii) जॉन हस [1369 – 1415 ईस्वी]

- यह बोहेमिया का निवासी था।
- यह वाइक्लिफ के विचारों का समर्थक था।
- इसने कहा कि एक सामान्य ईसाई को पवित्र बाइबिल के अध्ययन से मुक्ति मिल सकती है।
- इसे चर्च के द्वारा जीवित जला दिया गया।

(iii) सेवोनारोला [1452 – 1498 ईस्वी]

- यह फ्लोरेंस का एक पादरी था।
- इसने पोप के भ्रष्ट एवं विलासितापूर्ण जीवन की आलोचना की।
- इसे भी चर्च के द्वारा जीवित जला दिया गया।

(iv) इरेस्मस [1466 – 1536 ईस्वी]

- इसने चर्च का उपहास उड़ाया और चर्च के महत्व को कम करने का प्रयास किया।
- यह उग्र नहीं था, यह विवेक एवं बुद्धि द्वारा चर्च में सुधार लाना चाहता था।
- इसके बारे में कहा जाता है "लूथर के क्रोध की अपेक्षा इरेस्मस के उपहासों ने पोप को अधिक हानि पहुँचाई।"

महान धर्म सुधारक

1. मार्टिन लूथर [1483 – 1546 ईस्वी]

- इसका जन्म जर्मनी के कृषक परिवार में हुआ।
- इसने धर्मशास्त्र का अध्ययन किया तथा विटेनबर्ग के विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त हुआ।
- 1512 ई. में इसने रोम की यात्रा की।
- पोप की जीवनशैली को देखकर धर्मशास्त्रों में उसकी आस्था समाप्त हो गई।
- 1517 ईस्वी में पोप के प्रतिनिधि के रूप में टेटजल विटेनबर्ग में इण्डलजेन्स की बिक्री कर रहा था, तब लूथर ने प्रतिक्रियास्वरूप '95 थीसिस' लेटिन भाषा में लिखकर चर्च के बाहर चिपका दियें।
- इनका जर्मन भाषा में अनुवाद किया तथा लोगों को बाँट दिया।
- लूथर मानता था कि जिसने **हृदय से प्रायश्चित** कर लिया, ईश्वर उसे पहले ही क्षमा कर देता है।
- लूथर ने यह स्वीकार नहीं किया कि पोप कभी गलती नहीं कर सकता।

  लूथर ने केवल तीन संस्कारों को स्वीकार किया–

  (i) नामकरण (Baptism)

  (ii) प्रसाद (Eucharist)

  (iii) प्रायश्चित (Penance)

  अपने विचार जनता तक पहुँचाने के लिए उसने तीन पुस्तके प्रकाशित की-

  (i) जर्मन समान्तवर्ग को एक सम्बोधन

  (ii) ईश्वरीय चर्च की बेबीलोनियाई कैद

  (iii) ईसाई मनुष्य की मुक्ति
- 1520 ईस्वी में पोप ने मार्टिन लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया। इन आदेशों को "पेपलबुल आदेश" कहा जाता है।
- लूथर ने सार्वजनिक रूप से इन आदेशों को जला दिया।
- 1525 ईस्वी में जर्मनी के किसानों ने लूथर के समर्थन में विद्रोह कर दिया, लेकिन लूथर ने इन्हें अपना समर्थन नहीं दिया।
- 1526 ईस्वी में धर्म प्रश्नों का समाधान करने के लिए स्पीयर में प्रथम धर्म सभा बुलाई।
- इस सभा में जर्मन शासक वर्ग 2 भागों में विभाजित हो गया।
- 1529 ईस्वी में स्पीयर की ''दूसरी धर्मसभा'', जिसमें लूथरवाद के विरूद्ध कठोर प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये।
- लूथर के समर्थक शासकों ने इन प्रस्तावों का विरोध किया।
- यह विरोध 19 अप्रैल, 1529 ईस्वी को किया गया था, अतः इसी दिन से ''प्रोटेस्टेंट धर्म'' का उदय माना जाता है।
- अब जर्मनी में एक ''गृहयुद्ध'' शुरू हो गया, जो 1555 ईस्वी में ''आंग्सबर्ग की सन्धि'' के द्वारा समाप्त हो गया।

संधि की प्रमुख शर्ते

(i) प्रत्येक शासक को अपना व अपनी जनता को धर्म चुनने की स्वतंत्रता दी गई।

(ii) 1552 ईस्वी से पूर्व प्रोटेस्टेंटो ने जो चर्च की शक्तियाँ हथिया ली थी उसे मान्यता दे दी गई।

(iii) लूथरवाद को पृथक धर्म के रूप में मान्यता दे दी गई।

(iv) कैथोलिक बाहुल्य वाले क्षेत्रों में लूथरवादियों को धर्म परिवर्तन हेतु बाध्य नहीं किया जायेगा।

(v) धार्मिक आरक्षण विधान के अनुसार प्रोटेस्टेंट बनने वाले कैथोलिकों को अपने पद त्यागने होंगे।

संधि की कमियाँ

(i) केवल लूथरवाद को ही मान्यता दी गई अन्यों को नहीं।

(ii) जनता अपना धर्म निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र नहीं थी।

(iii) 1618 ईस्वी में जर्मनी में धर्म के नाम पर पुनःगृह युद्ध शुरू हो गया, जो 1648 ईस्वी में ''वेस्टफेलिया की संधि'' द्वारा समाप्त हुआ।

मार्टिन लूथर की कमियाँ

(i) यह राजतंत्रात्मक व्यवस्था का पक्षधर था।

(ii) यह राजत्व के दैवीय अधिकारों के सिद्धांत का पक्षधर था।

(iii) यह दास प्रथा का समर्थक था।

(iv) इसने किसान विद्रोह का समर्थन नहीं किया।

2. ज्विंगली [1484 – 1531 ईस्वी]

- यह स्विट्जरलैण्ड का निवासी था।
- इसने धर्म के क्षेत्र में उपवास और सन्तों की पूजा का विरोध किया।
- इसने पादरियों के विवाह का समर्थन किया।
- 67 प्रश्न इससे संबंधित थे।
- 1523 ईस्वी में यह कैथोलिक चर्च से अलग हो गया।
- 1525 ईस्वी में इसने 'रिफार्म्ड चर्च' का निर्माण किया।
- 1531 ईस्वी में 'कोपेल की संधि' के द्वारा रिफार्म्ड चर्च को मान्यता प्राप्त हुई।

3. जॉन काल्विन [1509 – 1564 ईस्वी]

- 1509 ईस्वी में फ्रांस में जन्म हुआ।
- 1533 ईस्वी में यह प्रोटेस्टेंट बन गया।
- फ्रांस के चर्च को सुधारने के प्रयासों के चलते वहाँ इसका विरोध हुआ, तो यह स्विट्जरलैण्ड चला गया।
- स्विट्जरलैण्ड में कॉल्विन ने एक पुस्तक लिखी–''ईसाई धर्म की संस्थापनाएँ'' या ''ईसाई धर्म के आधारभूत सिद्धांत''।
- काल्विन एक उग्र विचारक था, इसने त्योहारों, आमोद-प्रमोद मण्डलियों में थियेटरों का विरोध किया।
- इसने व्याभिचार हेतु मृत्युदण्ड का समर्थन किया।
- इसने दो प्रमुख सिद्धान्त दिये
  - (i) पूर्व नियति का सिद्धान्त (Doctrine of Predestination)
  - (ii) मनोनयन की अवधारणा (The Concept of the Election)
- इसके अनुयायियों की संख्या लूथर से भी अधिक थी।
- इन्हे इंग्लैण्ड में ⇒ प्यूरिटन, स्कॉटलैण्ड ⇒ प्रेस बेटोरियन एवं फ्रांस व अमेरिका ⇒ ह्यूगनॉट कहा जाता था।

4. लूथर व कॉल्विन में विभिन्नताएँ

	लूथर	कॉल्विन
(i)	धर्म व राजनीति को पूर्णतया पृथक नहीं करता था।	यह इसे पूर्णतया पृथक करता था।
(ii)	राजतंत्र का समर्थक था।	यह जनतंत्र का समर्थक था।
(iii)	यह तीन संस्कारों को मानता था।	यह दो संस्कारों को मानता था।
(iv)	चमत्कारों को प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार करता था।	यह पूर्णतया चमत्कार को अस्वीकार करता था।
(v)	यह कर्मवाद में विश्वास करता था।	यह नियतिवाद में विश्वास करता है।
(vi)	उदार दृष्टिकोण से सुधार लाना चाहता था।	कठोर तरीके से आमूल-चूल परिवर्तन लाना चाहता था। (उग्र तरीके से)
(vii)	समर्थक - • राजा, • कृषक	समर्थक - • व्यापारी वर्ग, • मध्यम वर्ग

5. एनाबैपटिस्ट आन्दोलन

यह पूर्णपरिवर्तनवादी सुधार आन्दोलन था। यह स्वेच्छापूर्वक तथा वयस्क होने पर अपना धर्म स्वीकार करने के सिद्धान्त पर आधारित था।

इस लिए इसे 'एडल्ट बैपटिज्म' भी कहा जाता है। पहली बार इनके द्वारा धार्मिक सिद्धान्त के रूप में सहिष्णुता की माँग की गई।

6. आंग्लधर्म सुधार आन्दोलन [एंग्लिकन विचारधारा]

आंग्लधर्म सुधार आन्दोलन का नेतृत्व इंग्लैण्ड के शासकों ने किया।

(i) हेनरी-VIII [1509 – 1547 ईस्वी]

- इसने सर्वोच्चता का अधिनियम पारित करवाया।
- इसके अनुसार इंग्लैण्ड के शासक को वहां के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी घोषित किया गया।
- आंग्ल-चर्च का पोप से संबंध-विच्छेद हो गया।
- मठों की सारी सम्पत्तियां जब्त कर ली गई।
- अब क्रेमर को कैंटरबरी का बिशप बनाया गया।
- इसने हेनरी को विवाह-विच्छेद की अनुमति दी।
- अब हेनरी ने **ऐन बोलिन** से विवाह कर लिया।
- हालांकि अभी भी आंग्ल चर्च कैथोलिक चर्च ही बना रहा।

(ii) एडवर्ड-IV [1547 – 1553 ईस्वी]

- इसने आंग्ल चर्च को **प्रोटेस्टेंट चर्च** में बदल दिया।
- इस समय क्रेमर ने एक सामान्य प्रार्थना पुस्तक का प्रकाशन करवाया तथा प्रसिद्ध 42 सिद्धान्तों की घोषणा की।

(iii) मैरी-I [1553 – 1558 ईस्वी]

- इसने पुराने शासकों के कार्यों को नकार दिया तथा रोम के साथ पुनः संबंध स्थापित किया।
- इसने स्पेन के कट्टर कैथोलिक शासक फिलिप-II से विवाह किया तथा क्रेमर को जीवित जलवा दिया।

(iv) एलिजाबेथ-I [1558 - 1603]

- इसने सर्वोच्चता व एकरूपता का अधिनियम पारित करवाया।
- आंग्ल चर्च की स्वतंत्रता पुनः स्थापित की गई।
- क्रेमर की पुस्तक का संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ तथा 42 सिद्धान्तों में कुछ संशोधन कर इन्हें 39 सिद्धांतों के रूप में पुनः स्थापित किया गया।

- इसके शासनकाल में आंग्ल धर्म का अंतिम स्वरूप निर्धारित हुआ, जो कि फिशर के शब्दों में-
  ''प्रशासनिक रूप से इरेस्टीयन
  कर्मकाण्ड में रोमन
  धर्मशास्त्रीय सन्दर्भ में काल्विनवादी'' था।
- आंग्ल चर्च का मिश्रित स्वरूप ही इसके स्थायित्व का आधार था।

प्रति धर्म सुधार आन्दोलन [Counter Reformation]

प्रोटेस्टेंटवाद के प्रवाह को रोकने के लिए दो महत्वपूर्ण सुझाव सामने आए-

प्रथम - वेनिस (इटली) ⇒ कार्डिनल कोन्टारैनी ⇒ **प्रस्ताव** - समझौता व मेल मिलाप।

द्वितीय - नेपुल्स ⇒ कार्डिनल करॉफा ⇒ **प्रस्ताव** - आन्तरिक सुधारो का।

- करॉफा का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ यह अगला पोप बना। [पॉल चतुर्थ के नाम से]
- इसने ट्रेंट में चर्च की परिषद का आयोजन किया। [1545 - 1563 ईस्वी]
- **ट्रेंट परिषद ने दो प्रकार के निर्णय लिये-**
  (1) सिद्धान्तगत निर्णय (Theoretical)
  (i) चर्च के **मूल सिद्धान्तों** में कोई परिवर्तन स्वीकार नहीं किया गया।
  (ii) **परम्परागत मान्यताओं** को **पुनः** बहाल किया गया।
  (iii) चर्च व पोप की सर्वोच्चता स्थापित की गई।
  (iv) 7 संस्कारों को मान्यता दी गई थी।
  (v) मुक्ति का माध्यम चर्च द्वारा सम्पन्न कार्य माने गए थे एवं चमत्कारों में **आस्था** प्रकट की गई।
  (vi) बाइबिल के **लैटिन संस्करण** को ही स्वीकार किया गया था।
  (vii) बाइबिल की व्याख्या का **अंतिम** आधार सिर्फ **चर्च** को ही दिया गया था।
  (2) सुधार कार्य/व्यावहारिक निर्णय (Reformation Work)
  (i) चर्च के पदों की बिक्री पर रोक एवं योग्यता के आधार पर नियुक्ति की व्यवस्था की गई।
  (ii) क्षमापत्रों की बिक्री पर रोक स्वीकार की गई।
  (iii) पादरियों के आचरण को संयमित एवं आदर्श बनाने का प्रयास किया गया।
  (iv) पादरियों की शिक्षा-दीक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया गया।
  (v) पादरियों को क्षेत्रीय भाषा में उपदेश देने की छूट दी गई।
  (vi) विरोधियों की पुस्तके पढ़ने पर निषेध किया गया।
  (vii) इन निर्णयों को लागू करने के लिए धार्मिक न्यायालयों (इनक्यूजिशन) को मान्यता दी गई।

इग्नेशियस लायोला [1491 - 1556 ईस्वी]

- इससे ''सोसायटी ऑफ जीसस'' की स्थापना की।
- इसके सदस्य 'जेसुइट' कहलाते थे।
- यह समाज कठोर अनुशासन और सैनिक आधार पर संगठित था।
- इसके प्रत्येक सदस्य को दीनता, पवित्रता, आज्ञापालन व पोप के प्रति समर्पण की शपथ लेनी पड़ती थी।
- लायोला ने समाज के सदस्यों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन और उत्प्रेरण के लिए "स्पीरिचुअल एक्सरसाईजेज" की रचना की।
- चर्च के द्वारा इसे 1535 ईस्वी में मान्यता प्रदान की गई।
- इसने कैथोलिक शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्य किया।

धर्म सुधार आन्दोलन के परिणाम/प्रभाव

1. धार्मिक परिणाम

(i) मध्यकालीन रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों पर आघात हुआ।

(ii) धर्म के नाम पर युद्ध।

(iii) ईसाई धर्म का विभाजन।

(iv) प्रतिधर्म सुधार आन्दोलन।

(v) धार्मिक सहिष्णुता का उदय।

(vi) धर्म के द्वारा हस्तक्षेप में कमी।

2. राजनीतिक परिणाम (Consequences)

(i) राष्ट्रवाद की भावना का उदय।

(ii) राष्ट्र राज्यों का उदय।

(iii) सामन्तवाद का पतन।

(iv) पोप की सर्वोच्चता का अन्त।

(v) धर्म निरपेक्षता का विकास।

(vi) संविधान का विकास।

3. सामाजिक प्रभाव

(i) नैतिक अनुशासन का विकास हुआ।

(ii) व्यक्तिवाद का सिद्धांत मजबूत हुआ।

(iii) व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विकास हुआ।

(iv) विवाह की अवधारणा प्रभावित हुई।

4. आर्थिक परिणाम

(i) **आर्थिक विकास**

धर्म सुधारकों ने आर्थिक रूप से उदार सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

(ii) **पूँजीवाद का उदय**

इस समय आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई तथा इस समय लाभ कमाने पर बल दिया गया।

(iii) **वाणिज्यवाद का विकास**

इस विचारधारा में राज्य ने व्यापारिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। क्योंकि इसका लक्ष्य "GGG" या [Gold, Glory, God]

5. अन्य परिणाम

(i) धर्म सुधार ने बौद्धिक प्रगति को पुष्पित एवं पल्लवित किया।

(ii) इस समय क्षेत्रीय भाषाओं को प्रश्रय मिला। तथा बाइबिल का लोक-भाषाओं में अनुवाद हुआ।

जैसे- काल्विन ने – फ्रेंच भाषा एवं लूथर ने – जर्मन भाषा।

(iii) धार्मिक युद्धों ने बड़े स्तर पर असहिष्णुता का भी परिचय दिया इससे बड़े स्तर जनसंहार हुआ एवं ललित कलाओं को नुकसान पहुँचा।

प्रश्न : मार्टिन लूथर की सफलता के कारणों का उल्लेख कीजिए ?

3 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम

- 1607 ईस्वी में अमेरिका में अंग्रेजों ने "जेम्स टाऊन" नाम से पहली बस्ती की स्थापना की।
- स्वतंत्रता संग्राम के समय अमेरिका 13 उपनिवेशों में विभाजित था।
- इन उपनिवेशों की जनसंख्या में धार्मिक रूप से उत्पीड़ित व अपराधी लोग शामिल थे।
- प्रत्येक कॉलोनी में एक **गवर्नर** होता था, यह ब्रिटिश **क्राउन** का प्रतिनधि था। वहां इसकी सहायता के लिए एक **जनप्रतिनिधि** सभा होती थी। इस प्रतिनिधि सभा में प्रत्येक शहर से दो प्रतिनिधि चुने जाते थे।
- इन उपनिवेशो पर **औपचारिक** रूप से **इंग्लैण्ड** का अधिकार था। ब्रिटिश संसद इन उपनिवेशों के लिए अनेक कानून बनाती थी, ताकि इन पर **आर्थिक नियंत्रण** स्थापित किया जा सकें।
- 1624 ईस्वी में उपनिवेशों के लिए अनिवार्य किया गया कि वे "**तम्बाकू व्यापार**" के लिए केवल **इंग्लैण्ड** के जहाजों का प्रयोग करें।
- 1651 ईस्वी में लागू "नेवीगेशन एक्ट" के अन्तर्गत उपनिवेशों के **सभी प्रकार** के **व्यापार** के लिए **इंग्लैण्ड** के जहाजों का प्रयोग अनिवार्य किया गया।
- 1673 ईस्वी में उपनिवेशों के आपसी व्यापार को विदेशी व्यापार का दर्जा दिया गया और इन पर आयात-निर्यात कर लगाया गया।
- 1732 ईस्वी में ब्रिटेन फर (**फर** $\Rightarrow$ छोटे पशुओं की स्कीन) की टोपियाँ बनाने और ताँबा गलाने पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।
- 1750 ईस्वी में "लौह उद्योग" पर नियंत्रण स्थापित किया गया।

सप्तवर्षीय युद्ध [1756 – 1763 ईस्वी]

कारण – कनाडा पर नियंत्रण

सप्तवर्षीय युद्ध $\Rightarrow$ इंग्लैण्ड v/s फ्रांस

(1) इस युद्ध ने उपनिवेशों के प्रति इंग्लैण्ड के दृष्टिकोण को बदल दिया।
- ब्रिटेन को उपनिवेशों से अनेक अपेक्षाएँ थी- **जैसे**

(i) सैनिक सहायता

(ii) अतिरिक्त करों की अदायगी

(iii) फ्रांस के साथ असहयोग
- लेकिन उपनिवेशवासियों ने इसमें इंग्लैण्ड के साथ सहयोग नहीं किया।

(2) इस युद्ध में ब्रिटेन का बहुत सारा धन खर्च हो गया।

(3) उपनिवेशों से फ्रांस का खतरा समाप्त हो गया। अब इंग्लैण्ड कठोर नीतियाँ अपना सकता था।

उपनिवेशों के प्रति ब्रिटेन की नीतियाँ

1. ग्रीनविले की नीति

इसने उपनिवेशों के लिए 4 अधिनियम पारित किये-

(i) 1764 ईस्वी में शुगर एक्ट

(ii) 1765 ईस्वी में स्टाम्प एक्ट

(iii) 1765 ईस्वी में करेंसी एक्ट

(iv) 1765 ईस्वी में क्वाटरिंग एक्ट

- उपनिवेशों में स्टाम्प एक्ट का सर्वाधिक विरोध किया गया। 1765 ईस्वी में 9 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने मिलकर "स्टाम्प एक्ट कांग्रेस" की स्थापना की।
- इसी समय जेम्स ऑटिस (नेतृत्वकर्त्ता) ने "प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" का नारा दिया।

2. रॉकिंघम की नीति

- इसने 'स्टाम्प एक्ट' को वापस ले लिया।
- रॉकिंघम की घोषणा – ब्रिटिश संसद अमेरिका पर कर लगाने के लिए पूर्णतया अधिकृत है।
- उपनिवेशवासियों ने रॉकिंघम घोषणा का भी विरोध किया।

3. टाउनशैंड की नीति

इसने 5 वस्तुओं पर आयत शुल्क लगाया–

(i) कागज
(ii) शीशा
(iii) चाय
(iv) सिक्का धातु
(v) रंग

उपनिवेशवासियों ने इन आयात शुल्कों का भी विरोध किया। इस विरोध के दौरान 5 मार्च, 1770 ईस्वी को ''बोस्टन हत्याकाण्ड'' हुआ। इसमें 5 आंदोलनकारी मारे गए।

4. लॉर्ड नॉर्थ की नीति

इसने 5 में से 4 करो को हटा दिया और चाय पर नाममात्र का कर रहने दिया।
उपनिवेशवासियों ने इसका भी विरोध किया।

5. बोस्टन टी पार्टी

नेता – सैम्युअल एडम्स

कुछ आन्दोलनकारियों ने "ब्रिटिश ईस्ट इंडिया" के जहाज से "340 चाय की पेटियाँ" समुद्र में फेंक दी। यह घटना ''बोस्टन टी पार्टी'' कहलाती है।

बोस्टन टी पार्टी का महत्व

(i) इसने उपनिवेशों में राष्ट्रवादी भावना को बढ़ाया।
(ii) इससे इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा।
(iii) इससे आंदोलनकारियों का मनोबल बढ़ा।

ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया

(i) बोस्टन बंदरगाह को बन्द कर दिया गया।
(i) बोस्टन शहर के प्रशासन को भंग कर दिया गया।
(iii) वहां की शासन व्यवस्था सेना को सौंप दी गई।
(iv) बोस्टन में नियुक्त सेना का पूरा खर्चा बोस्टन के निवासियो को देना था।
(v) हत्या के मामलों को अन्य नगरों में स्थानांतरित कर दिया गया।
(vi) बोस्टन में रहने वाले फ्रांसीसी कैथोलिको को धार्मिक स्वतंत्रता दे दी गई।

प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस

- 5 सितम्बर, 1774 ईस्वी
- स्थान – फिलाडेल्फिया का मेसाचुसेट्स शहर
- इसमें 12 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- जॉर्जिया ने इसमें भाग नहीं लिया।

निर्णय/माँगे

(i) बोस्टन में की गई दमनात्मक कार्यवाही का विरोध किया गया और इन आदेशों को वापस लेने की अपील की गई।

(ii) उपनिवेशवासियों ने आंतरिक स्वायत्तता की माँग की।

(iii) 1765 ईस्वी के बाद पारित किए गए सभी कानूनों को समाप्त करने की माँग की गई।

- ऐसा नहीं करने पर इंग्लैण्ड की सरकार व वस्तु के बहिष्कार की नीति अपनाने की चेतावनी दी गई।
- **लैक्सिंगटन का युद्ध**

  19 अप्रैल, 1775 ईस्वी
- इस घटना ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम को शुरू कर दिया।

दूसरी महाद्वीपीय कांग्रेस

- 10 मई, 1775 ईस्वी
- **स्थान** - फिलाडेल्फिया का मेसाचुसेट्स शहर
- इसमें 13 उपनिवेशों ने भाग लिया।
- **अध्यक्ष** – जॉन हेनकॉक

निर्णय

(i) इसमें स्वतंत्रता संग्राम के आरम्भ की घोषणा की गई।

(ii) यह निर्णय लिया गया कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हथियारों का प्रयोग किया जाए।

(iii) जॉर्ज वांशिगटन को अमेरिकी सेनाओं का सेनापति नियुक्त किया गया।

बंकर हिल का युद्ध [1776 ईस्वी]

इस युद्ध में वॉशिगंटन के नेतृत्व वाली सेना बुरी तरह पराजित होती है।

[**4 जुलाई, 1776 ईस्वी** को सभी 13 अमेरिकी उपनिवेशों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।]

साराटोगा का युद्ध [1777 ईस्वी]

इसमें वॉशिंगटन के नेतृत्व वाली सेना ने ब्रिटिश सेना को पराजित किया।

इस विजय के बाद 1778 ईस्वी में फ्रांस, 1779 ईस्वी में स्पेन और 1780 ईस्वी में हॉलैण्ड ने अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

यार्कटाउन का युद्ध [1781 ईस्वी]

इस युद्ध में जॉर्ज वांशिगटन के नेतृत्व वाली सेना ने कॉर्नवालिस के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना को पराजित कर दिया।

पेरिस की संधि [1783 ईस्वी]

इस संधि के द्वारा ब्रिटेन ने 13 अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के कारण

1. राजनैतिक चेतना

अमेरिकी लोग मूलरूप से यूरोपीय थे इसलिए स्वतंत्रता और स्वाधीनता के मूल्य उन्हें विरासत में मिले थे।

उदाहरण – अमेरिकी उपनिवेशों का प्रशासनिक ढाँचा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था।

उपनिवेश वर्जीनिया ने 1618 ईस्वी में स्वायत्तता की माँग की।

2. इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति का अभाव

कारण

(i) अधिकांश उपनिवेशवासी धार्मिक उत्पीडन से परेशान होकर मजबूरन इंग्लैण्ड छोड़कर आये।

(ii) उपनिवेशों से अधिकांश निवासी वास्तव में अपराधी थे जिन्हें इंग्लैण्ड से निर्वासित किया गया था।

(iii) इंग्लैण्ड व अमेरिका के बीच भौगोलिक दूरी तथा लम्बा समय अंतराल।

(iv) इंग्लैण्ड के अलावा यूरोप के अन्य देशों के नागरिक भी उपनिवेशों में बसे हुए थे।

3. उपनिवेशों का आर्थिक शोषण

उपनिवेशों के आर्थिक शोषण के लिए ब्रिटिश संसद ने अनेक अधिनियम पारित किए, **जैसे-**

(i) नेविगेशन एक्ट

(ii) ट्रेडिंग रेगुलेशन एक्ट

(iii) इण्डस्ट्रियल रेगुलेशन एक्ट

इन अधिनियमों में उपनिवेशों के हितों की उपेक्षा की गई थी।

4. बौद्धिक आंदोलन

अनेक बौद्धिक विचारकों ने अमेरिका में बौद्धिक चेतना के विकास में अपना योगदान दिया। **जैसे-**

- वाल्टेयर
- रूसो
- मान्टेस्क्यू
- काण्ट

टॉमस पेन

- यह इंग्लैण्ड का निवासी था।
- इसने इंग्लैण्ड की औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया और अमेरिकी स्वतंत्रता का समर्थन किया।
- इसका प्रसिद्ध कथन था कि "ये कितनी विचित्र बात है कि एक द्वीप एक महाद्वीप पर शासन कर रहा है।"

बुक (Book)

(i) कॉमन सेंस

(ii) तर्क का युग (द एज ऑफ रीजन)

(iii) मनुष्य के अधिकार (द राइट्स ऑफ मैन)

जेम्स ऑटिस

इसके प्रसिद्ध कथन - ''प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं''

''इतिहास में शुरू से लेकर अब तक सभी शासक दमनकारी हुए है परन्तु इससे दमन करना उनका अधिकार तो नहीं बन जाता।''

सैम्युअल एडम्स और टॉमस जेफरसन

इन्होंने ''कमेटी ऑफ कॉरस्पोन्डेस'' की स्थापना की और इसके माध्यम से राष्ट्रवादी विचारों का तथा बौद्धिक चेतना का प्रचार-प्रसार किया।

बेंजामिन फ्रेंकलिन

- इसने ''फिलॉसॉफीकल सोसायटी ऑफ अमेरिका'' की स्थापना की।
- इसने राष्ट्रवादी भावनाओं से युक्त शैक्षणिक एवं साहित्यिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया।

5. उपनिवेशों का दोषपूर्ण प्रशासनिक ढाँचा

अमेरिकी उपनिवेशों के प्रशासन में शक्ति के 2 केन्द्र थे-

(i) गवर्नर

(ii) प्रतिनधि सभा

ये दोनों अलग-अलग संस्थाओं के प्रति उत्तरदायी थे।

इस वजह से इनके बीच विवाद की स्थिति रहती थी।

6. ब्रिटेन द्वारा उपनिवेशों में नगण्य हस्तक्षेप

इसकी वजह से उपनिवेशवासी राजनैतिक और प्रशासनिक स्वतंत्रता के आदी हो चुके थे।

7. सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव

8. ब्रिटेन द्वारा अपनाई गई कठोर नीतियाँ

(i) ग्रीनविले

(ii) रॉकिंघम

(iii) टाउनशैंड की नीतियाँ

9. तात्कालिक कारण

लॉर्ड नॉर्थ की चाय नीति

10. जॉर्ज तृतीय का योगदान

यह संसद की शक्तियों को नियंत्रित कर इंग्लैण्ड में अपनी निरकुंश सत्ता स्थापित करना चाहता था।

इसके लिए उसने अतार्किक, अदूरदर्शी और जल्दबाजी से युक्त निर्णय किये।

यह वास्तविक स्थिति को समझने में नाकाम रहा पर अपनी हठधर्मिता के कारण उपनिवेशवासियों को इंग्लैण्ड का उग्र विरोधी बना दिया।

यदि वह विवेकशीलता से निर्णय लेता तो सम्भवतः क्रांति को कुछ समय तक टाला जा सकता था।

प्रश्न : अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटेन की पराजय के कारण ?

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम/प्रभाव

(i) विश्व मानचित्र पर अमेरिका नामक एक नये देश का उदय हुआ।

(ii) पहली बार राजनैतिक सिद्धांत व्यावहारिक रूप से लागू किए गए।

(iii) पहली बार किसी देश को पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया।

(iv) पहला लिखित संविधान लागू किया गया। [1789]

(v) संघात्मक व्यवस्था लागू की गई।

(vi) अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली की शुरूआत/स्थापना की गई।

(vii) स्वतंत्र न्यायपालिका की स्थापना की गई।

(viii) न्यायिक पुनरावलोकन के लिए प्रावधान किए गए।

(ix) नागरिकों को मूल अधिकार प्रदान किए गए। (10वें संविधान संशोधन द्वारा)

(x) अमेरिका का आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित होना।

(xi) अमेरिका ने सबसे पहली बार ''मुक्त व्यापार नीति'' को अपनाया था।

(xii) इसके अलावा अमेरिका का शैक्षणिक व सामाजिक विकास भी इसी क्रांति का परिणाम था।

इंग्लैण्ड पर प्रभाव

(i) इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को भारी आघात लगा।

(ii) भौगोलिक व आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा उपनिवेश इसके हाथों से निकल गया।

(iii) इसके बाद इंग्लैण्ड ने उपनिवेशों के प्रति अपनी नीति में भारी बदलाव किया।

(iv) इंग्लैण्ड के राजा जॉर्ज तृतीय की प्रतिष्ठा को धक्का लगा।

(v) अब राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया गया इससे इंग्लैण्ड में लोकतंत्र का विकास हुआ।

(vi) **अमेरिकी स्वतंत्रता ने आयरिश लोगों को भी प्रेरित किया–**

- 1782 ईस्वी में आयरिश संसद को मान्यता दे दी गई।
- 1793 ईस्वी में कैथोलिक आयरिशों को मताधिकार दिया गया।
- 1800 ईस्वी में इन्हें ''वेस्टमिन्सटर'' का एक हिस्सा घोषित किया गया।

फ्रांस पर प्रभाव

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम ने फ्रांस की क्रांति का आधार तैयार किया।

(1) जिन फ्रांसीसी सैनिकों ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था उन्होंने वापस आकर क्रांति के आदर्शों और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया।
इससे फ्रांस में राजनैतिक चेतना का विस्तार हुआ।

(2) जब फ्रांस ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया इसकी आर्थिक स्थिति अत्यधिक खराब हो गई।
जब फ्रांस ने इसमें सुधार का प्रयास किया तो वहाँ पर क्रांति की शुरूआत हो गई।

शेष विश्व पर प्रभाव

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में तीसरी दुनिया के देशों के लिए प्रेरणास्रोत का काम किया।
- एक विचारधारा के रूप में ''वाणिज्यवाद'' (Mercantilism) का पतन हो गया।
- अब एक नई विचारधारा का उदय हुआ, जिसने "**मुक्त व्यापार नीति**" पर बल दिया।

4 फ्रांस की क्रांति–1789 ईस्वी

फ्रांस की क्रांति के कारण

1. राजनैतिक कारण

(i) फ्रांस में निरकुंश, वंशानुगत, केन्द्रीकृत राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी।

(ii) फ्रांस में लुई-14 ने सामन्तों और कुलीनों का दमन करके शासन की पूरी शक्तियाँ अपने हाथों में केन्द्रित कर ली थी।

(iii) लुई-14 कहा करता था कि ''मैं ही फ्रांस हूँ''।

(iv) इसके बाद क्रमशः लुई-15, व लुई-16 शासक बने।

(v) ये दोनों ही अयोग्य एवं अकर्मण्य शासक थे।

- अयोग्य शासकों की वजह से फ्रांस में **प्रशासनिक** अस्थिरता उत्पन्न हुई, जिसके लिए अन्य परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार थी- **जैसे-** फ्रांस में अधिकांश प्रशासनिक पदों पर कुलीन वर्ग का अधिकार तथा ये पद वंशानुगत थे।
- फ्रांस में कानूनों की एकरूपता का अभाव था, सामान्यतः प्रत्येक 12 km की दूरी पर कानून बदल जाते थे।
- फ्रांस में लेत्र-दे-काशे का प्रचलन था। ये एक प्रकार का वारन्ट था, जिसका शक्तिशाली लोगों द्वारा दुरूपयोग किया जाता था।

2. सामाजिक कारण

फ्रांसीसी समाज 3 भागों में विभाजित था-

(1) पादरी वर्ग

(2) कुलीन वर्ग

(3) जनसाधारण वर्ग

(1) पादरी वर्ग

- जनसंख्या = 1%
- भूमि = 12%

ये राज्य को किसी भी प्रकार का कर नहीं देते थे बल्कि लोगों से टीथे नामक कर वसूलते थे।

पादरी वर्ग भी 2 भागों में विभाजित था-

(i) बिशप (Atchbishops)

इनका जीवन अत्यधिक विलासिता पूर्ण था।

(ii) सामान्य पादरी

(2) कुलीन वर्ग

जनसंख्या = 5%

भूमि = 15%

- प्रशासन, चर्च व सेना के सभी उच्च पद इनके लिए आरक्षित होते थे।
- ये राज्य के करों से पूर्णतः मुक्त थे।
- ये वर्साय में रहते थे और विलासितापूर्ण जीवन जीते थे।
- ये अत्यधिक अहंकारी लोग थे, तथा जनसाधारण को अपमानित करते रहते थे।

(3) जनसाधारण वर्ग

- उपर्युक्त दो वर्गों के अतिरिक्त सभी लोग साधारण वर्ग के अन्तर्गत आते थे।
- यह वर्ग राज्य को सभी प्रकार के कर देता था, लेकिन इनके पास किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं थे।
- जन साधारण में उच्च मध्यम वर्ग के लोग आर्थिक रूप से सशक्त थे, तथा ये राजनैतिक शक्ति प्राप्त करना चाहते थे।

3. आर्थिक कारण

- 18वीं शताब्दी के अंतिम दौर में यह कहा जाता था कि फ्रांस सम्पन्न होता जा रहा था तथा फ्रांस की सरकार गरीब होती जा रही थी।
- **सरकार की आर्थिक विपन्नता के अनेक कारण थे-**
  - (i) अनुत्पादक उच्च वर्ग
  - (ii) राज परिवार का विलासितापूर्ण जीवन।
    इस पर राज्य की आय का लगभग 6% भाग खर्च होता था।
  - (iii) राज्य अनेक अनावश्यक युद्धों में उलझा हुआ था।
  - (iv) राज्य की आय का 75% भाग पुराने ऋणों के भुगतान में खर्च होता था।
- बचत नहीं होने के कारण सरकार कल्याणकारी कार्यों को सम्पादित नहीं कर पाती थी और सरकारी कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल पाता था।
- फ्रांस के किसानों की स्थिति भी अत्यंत खराब थी, इन्हें अपनी आय का 80% भाग करों के रूप में चुकाना होता था।
- इसके अतिरिक्त इन्हें बेगार (Korve) भी देनी होती थी।

4. बौद्धिक कारण

निम्नलिखित कथन फ्रांसीसी क्रांति में बौद्धिक जागरण के महत्व को स्पष्ट करते हैं-

अनेक विद्वानों ने फ्रांस में बौद्धिक विकास व स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित किया। **जैसे-**

(i) वाल्तेयर

विरोध - धार्मिक आडम्बर, चर्च में भ्रष्टाचारों का, कुलीन वर्ग के विशेषाधिकारो का।

समर्थन

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सीमित राजतंत्र, कानून की सरल भाषा, कानून की एकरूपता।
दण्ड व कानून की अनुपातिकता।

(ii) मान्तेस्क्यू

बुक (Book)

- द पर्शियन लैटर्स
- द स्पिरिट ऑफ लॉज

इस पुस्तक में इसने दो महत्वपूर्ण सिद्धांत दिये-

- शक्तियों का पृथक्करण
- नियंत्रण एवं संतुलन

इसने संवैधानिक सरकार का समर्थन किया।

(iii) रूसो

विरोध

- आधुनिक सभ्यता
- सांस्कृतिक विकास
- वैज्ञानिक विकास
- निजी संपत्ति की अवधारणा
- सामाजिक असमानता $\Rightarrow$ प्राकृतिक एवं कृत्रिम का विरोध

समर्थन

राज्य का ''सामाजिक संविदा'' का सिद्धांत
प्राकृतिक अधिकार $\Rightarrow$ स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व
जनता की सम्प्रभुता का समर्थन
कानून जनता की इच्छा का (सामान्य इच्छा) परिणाम।
रूसों ने निरकुंश शासन का विरोध किया तथा जनता को निरकुंश शासक को हटाने का अधिकार दिया।
"सामाजिक संविदा" इसकी प्रसिद्ध कृति थी।

(iv) दिदरो

- रचना - ''विश्वकोष'' (एनसाइक्लोपीडिया)
- इन विचारकों ने अप्रत्यक्ष रूप से फ्रांसीसी क्रांति में योगदान दिया, इन्होंने सम्पूर्ण विश्व के मानव समाज के सन्दर्भ में अपनी बाते कहीं।

5. तात्कालिक कारण

(i) तुर्गों की नीति

- जब राज्य की आर्थिक स्थिति बिगडी तो तुर्गों को वित्तमंत्री बनाया गया।
- इसमें मितत्ययता एवं खर्चों में कटौती की नीति अपनाई।
- इसकी नीति की वजह से इसका विरोध हुआ तथा पद से हटा दिया गया।

(ii) नैकर की नीति

- इसने भी तुर्गों की नीति को अपनाया।
- इसने फ्रांस की आय और व्यय का विस्तृत ब्यौरा प्रकाशित करवाया जिसे ''काम्ते रेन्दू'' कहा गया।

(iii) कैलोन की नीति

- इसने नये ऋण लेने पर बल दिया।
- जब फ्रांस को नए ऋण मिलना बन्द हो गये।
- इसमें कुलीन वर्ग पर कर लगाने व विशेषाधिकार समाप्त करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- राजा ने यह प्रस्ताव विशिष्टों की सभा के सामने रखा।
- सभा ने इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तथा कैलोन को इसके पद से हटा दिया गया। (एस्टेट्स जनरल)

(iv) ब्रियां की नीति

- इसने भी कैलोन के प्रस्ताव का समर्थन किया।
- इसने यह प्रस्ताव विशिष्टों की सभा के समक्ष रखा, सभा ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। तथा राजा ने सभा को भंग कर दिया।
- अब यह प्रस्ताव पार्लेमां के समक्ष रखा गया, लेकिन पार्लेमां ने नये करों को पंजीकृत करने से मना कर दिया तथा घोषणा की, कि ''नये कर लगाने का अधिकार केवल एस्टेट्स जनरल'' के पास है।
- अब राजा ने पार्लेमां को भंग कर दिया तथा स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाने की घोषणा की।
- राजा ने इसके लिये दो शर्तें निर्धारित की-
  (i) तृतीय एस्टेट के सदस्यों की संख्या दोगुना कर दी गई।
  (ii) राजा ने जनप्रतिनिधियों से ''काहिए (जन शिकायती पत्र)'' पत्र मंगवाए।

घटनाक्रम

- 5 मई, 1789 ईस्वी को लुई-16 ने स्टेट्स जनरल का उद्घाटन किया।
- 17 जून, 1789 ईस्वी को III स्टेट ने स्वयं को ''राष्ट्रीय सभा'' घोषित किर दिया।
- 20 जून, 1789 ईस्वी को III स्टेट ने टेनिस कोर्ट की शपथ ली।
- 27 जून को राजा ने III स्टेट को ''राष्ट्रीय सभा'' के रूप में मान्यता दे दी।

1. राष्ट्रीय सभा

- 9 जुलाई को राजा ने राष्ट्रीय सभा को ही ''संविधान सभा'' के रूप में मान्यता दे दी।
- 11 जुलाई को राजा ने ''नैकर'' को इसके पद से हटा दिया।
- 14 जुलाई को ''बास्तील के दुर्ग'' का पतन हुआ।
- इस दिन से **फ्रांस की क्रांति** की शुरूआत मानी जाती है।अतः यह दिन फ्रांस में ''राष्ट्रीय दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।
- 4 अगस्त, 1789 ईस्वी राष्ट्रीय सभा ने विशेषाधिकारों की समाप्ति की घोषणा कर दी। (नोआइये पहला कुलीन व्यक्ति था जिसने अपने विशेषाधिकार त्यागे।)
- 27 अगस्त, 1789 ईस्वी को राष्ट्रीय सभा द्वारा मानवाधिकारों की घोषणा की गई।
- मानवाधिकारों की घोषणा का उद्देश्य - संविधान सभा का मार्गदर्शन करना था।
- इसमें कुल 17 धाराएँ थी।
- 5 – 6 अक्टूबर, 1789 ईस्वी पेरिस की महिलाओं का मार्च।
- इस घटना के बाद ''पेरिस'' क्रांति का केन्द्र बन गया।

चर्च का राष्ट्रीयकरण

- चर्च का राष्ट्रीयकरण पूरी तरह से आर्थिक कारणों से प्रेरित था।
- चर्च को पूरी तरह राज्य के अधीन कर दिया गया।
- धार्मिक अधिकारियों का निर्वाचन अब जनता के द्वारा किया जाता था।
- इन्हें राज्य के प्रति निष्ठा की शपथ लेनी पड़ती थी।
- इन्हें राजकोष से वेतन दिया जाना था।
- चर्च की सम्पत्तियों पर बॉण्ड (असाइनेट) जारी कर दिये गये।
- इन पर 5% ब्याज दिया जाता था।
- जिन पादरियों ने इसे स्वीकार किया वे ''ज्यूरर'' कहलाए तथा जिन्होंने इसे अस्वीकार किया वे ''नॉन ज्यूरर'' कहलाए।
- राष्ट्रीय सभा ने सितम्बर, 1791 में संविधान का निर्माण किया और स्वयं को विसर्जित कर दिया।

2. व्यवस्थापिका सभा [1791 – 1792 ईस्वी]

- इसमें सीमित राजतंत्रात्मक व्यवस्था को अपनाया गया था।
- राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया गया।
- अब शासन की वास्तविक शक्तियाँ व्यवस्थापिका सभा को दे दी गई।
- व्यवस्थापिका सभा के सदस्य 2 भागों में विभाजित थे।

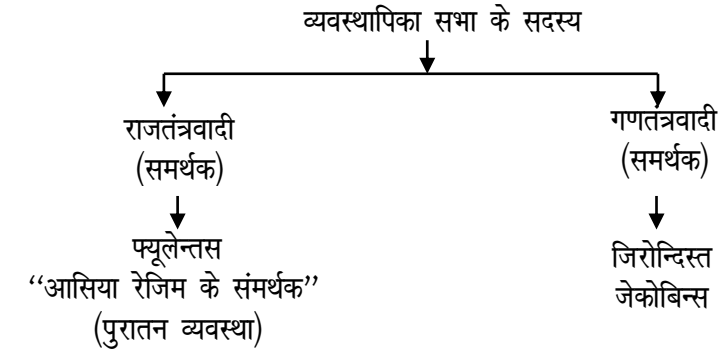

- **जिरोन्दिस्त पार्टी**
  - ये उदार गणतंत्रवादी थे।
  - ये उच्च मध्यम वर्ग से संबंधित थे।
  - ये उच्च शिक्षित एवं सुसभ्य लोग थे।
  - इनमें अधिकांश प्रतिनिधि फ्रांस में जिरोन्द प्रान्त से थे, इसलिए इन्हें ''जिरोन्दिस्त'' कहा जाता था।
  - ये व्यवस्थापिका सभा में ये बहुमत में थे।
  - ये राजा को हटाना चाहते थे तथा फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना करना चाहते थे।
  - इसके लिए यह राजा को गद्दार घोषित करना चाहते थे तथा इसके लिए ये विदेशी मोर्चे पर युद्ध शुरू करना चाहते थे।
- **मुख्य नेता**
  (a) मादाम रोलां
  (b) टॉमस पेन
  (c) ब्रिसो
  (d) इस्नार
  (e) पेसियो
  - जब जून, 1792 ई में राजा ने फ्रांस से भागने की कोशिश की, तो इन्होंने इसे गिरफ्तार कर लिया तथा एक नये संविधान का निर्माण किया।
- **जिरोन्दिस्तों के पतन के कारण**
  (a) अत्यधिक आदर्शवादी होना।
  (b) इनका संगठन कमजोर व अनुशासन खराब था।
  (c) युद्ध में फ्रांस की लगातार पराजय।
  (d) प्रारम्भ में इनके पास बहुमत था, अतः इन्होंने जेकोबिन्स के प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।
  (e) इन्होंने अपनी अधिकांश शक्ति व समय जेकोबिन्स व पेरिस की निंदा करने में खर्च कर दिया।

3. नेशनल कन्वेंशन [1792 – 1795 ईस्वी]

इसमें जेकोबिन्स दल बहुमत में था, क्योंकि इनकी उग्र राष्ट्रवादी भावना व सितम्बर हत्याकाण्ड (2 – 6 सितम्बर) के कारण ये पेरिस में लोकप्रिय हो गये थे।

- **जेकोबिन्स**
  - ये पेरिस व उसके आस-पास के क्षेत्रों के लोग थे।
  - ये निम्न मध्यम वर्ग से संबंधित थे।
  - ये कट्टर गणतंत्रवादी एवं उग्र राष्ट्रवादी थे।
  - इनका संगठन अत्यधिक अनुशासित था।
  - ये आदर्शवादी होने के बजाय अधिक व्यावहारिक थे।
  - इन्होंने क्रांति की रक्षा के लिए उचित व अनुचित सभी साधनों का प्रयोग किया।

  इनके मुख्य नेता
  (i) दांतो
  (ii) मारां
  (iii) सैजुस्त
  (iv) रॉब्सपियर

- जेकोबिन्स ने मार्च 1793 से जुलाई 1794 तक ''आंतक का राज'' स्थापित किया।
- इसमें ''अप्रैल 1794 से जुलाई 1794 के बीच'' रॉब्सपियर की तानाशाही रही।
- रॉब्सपियर ने फ्रांस में ''सदगुणों के राज्य'' की स्थापना की।
- यह ''सामाजिक संविदा'' (रूसो की पुस्तक (Book)) के आदर्शों पर आधारित था।
- अंत में नेशनल कन्वेंशन ने रॉब्सपियर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया तथा 28 जुलाई, 1794 ई. को उसे ''गिलोटीन'' पर चढ़ा दिया गया, इसे ''थर्मोडोरियन क्रान्ति'' कहा जाता है।

4. डायरेक्ट्री शासन [1795 – 1799 ईस्वी]

- इस व्यवस्था में सारी शक्तियाँ 5 निदेशकों के हाथ में केन्द्रित थी। इसलिए इसे डायरेक्ट्री शासन के नाम से जाना जाता था।
- यह काल भी कानून व्यवस्था की दृष्टि से अव्यवस्था, अशान्ति व अराजकता का दौर था, क्योंकि डायरेक्ट्री के लोग अयोग्य व अकुशल थे।
- कालान्तर में नेपोलियन ने डायरेक्ट्री शासन का तख्ता पलट कर दिया तथा "काउंसल व्यवस्था" की स्थापना की।

क्रान्ति फ्रांस में ही क्यों ?

1. राजनैतिक एकीकरण

- इस समय तक फ्रांस राजनीतिक दृष्टि से पूर्ण राज्य बन चुका था।
- जबकि यूरोप के अन्य देशों की ऐसी स्थिति नहीं थी, **जैसे–**
  (i) अभी तक जर्मनी व इटली का एकीकरण नहीं हुआ था।
  (ii) ऑस्ट्रिया राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक विभिन्नताओं से ग्रसित देश था।
  (iii) यद्यपि इंग्लैण्ड फ्रांस की तरह एकीकृत राष्ट्र था, लेकिन वहाँ की परिस्थितियाँ फ्रांस से अलग थी।

2. राजाओं की अयोग्यता

- 18वीं शताब्दी में फ्रांस में लगातार दो अयोग्य शासकों का शासन रहा, **जैसे–** लुई-15 व लुई-16।
- लेकिन इसी समय यूरोप में अनेक योग्य शासक, शासन कर रहे थे। **जैसे–**
  (i) प्रशा ⇒ फ्रेडरिक महान
  (ii) रूस ⇒ कैथरीन द ग्रेट
  (iii) ऑस्ट्रिया ⇒ जोसेफ-II
  (iv) स्पेन ⇒ चार्ल्स-III
- ये सभी यूरोप के प्रबुद्ध निरकुंश शासक कहलाते हैं।

3. बुर्जुआ वर्ग का उदय

- 18वीं शताब्दी तक फ्रांस में एक शक्तिशाली बुर्जुआ वर्ग का उदय हो चुका था।
- इनकी आर्थिक स्थिति बेहतर थी, लेकिन इनके पास किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं थे। अतः इन्होंने फ्रांस की क्रांति को शुरू किया तथा इसका नेतृत्व किया।
- यूरोप के अन्य देशों में इस समय तक इतने शक्तिशाली बुर्जुआ वर्ग का उदय नहीं हुआ था।
- केवल इंग्लैण्ड में शक्तिशाली बुर्जुआ वर्ग था, जिसके पास राजनीतिक अधिकार थे।

4. कुलीन वर्ग

18वीं शताब्दी के दौरान फ्रांस का कुलीन वर्ग यूरोप का सर्वाधिक अकर्मण्य वर्ग था, ये सभी वर्साय में रहते थे तथा विलासितापूर्ण जीवन जीते थे।

5. किसानों की स्थिति

यदि हम तत्कालीन यूरोप के किसानों की तुलना करें, तो हम पाते हैं कि फ्रांस के किसान आर्थिक व राजनैतिक चेतना की दृष्टि से अन्यों से आगे थे।

जैसे – ऑस्ट्रिया में किसान को 'रोबोट' कहा जाता था तथा प्रशा में 'कम्मी' कहा जाता था। (इनकी स्थिति दासो के समान थी)

6. बुद्धिजीवी वर्ग

18वीं शताब्दी को 'प्रबोधन का काल/युग' कहा जाता है।

जिसका केन्द्र फ्रांस था। इस समय फ्रांस में अनेक महत्वपूर्ण विद्वान हुए।

जैसे - वाल्तेयर, मान्तेस्क्यू, रूसो आदि।

7. पेरिस के महत्व में कमी

लुई-14 के द्वारा फ्रांस की राजधानी पेरिस से वर्साय स्थानांतरित कर दी गई, जिससे फ्रांस की जनता में असंतोष उत्पन्न हो रहा था। तथा उन्होंने फ्रांस की क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया।

फ्रांस की क्राति के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

1. कुलीनता का अन्त

- नेपोलियन ने फ्रांस की क्रांति के बारे में कहा था कि ''फ्रांस के लोग स्वतंत्रता नहीं समानता चाहते हैं।''
- इसी प्रकार से फ्रांस की क्रांति के दौरान राष्ट्रीय सभा के द्वारा विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया था।
- इसने कालान्तर में सम्पूर्ण यूरोप को प्रेरित किया।

2. लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना

- फ्रांस की क्रांति ने निरकुंश राजतंत्र को समाप्त कर लोकतंत्र एवं गणतंत्रात्मक व्यवस्था की स्थापना की।
- क्रांति के दौरान बनी सभी सरकारें लोकतांत्रिक थी।

3. धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना

- राष्ट्रीय सभा ने फ्रांस के चर्च पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था तथा चर्च का राष्ट्रीयकरण कर दिया था।
- इसने शासन में चर्च का हस्तक्षेप समाप्त कर दिया। कालान्तर में नेपोलियन ने चर्च के साथ समझौता किया जिसमें इस स्थिति को बरकरार रखा गया।

4. राष्ट्रवाद की भावना का विकास

क्रांति के दौरान जब फ्रांसीसी समाज के प्रत्येक वर्ग ने क्रांति की रक्षा के लिए युद्ध में भाग लिया तो फ्रांस के जन-सामान्य वर्ग में राष्ट्रवाद की भावना का विकास हुआ।

5. युद्ध की अवधारणा में बदलाव

क्रांति से पूर्व राजाओं की सेना युद्ध में भाग लिया करती थी लेकिन क्रांति के दौरान प्रत्येक सामान्य फ्रांसीसी ने अपनी क्षमता के अनुसार युद्ध में भाग लिया।

इसने युद्ध की अवधारणा को परिवर्तित कर दिया।

6. कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विकास

क्रांति के दौरान जब फ्रांस के नागरिकों ने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया, तो राज्य ने भी अपने उत्तरदायित्व को समझा, इसीलिए क्रांति के दौरान फ्रांस में जनसाधारण से संबंधित अनेक कानूनों का निर्माण किया गया।

7. समाजवादी विचारधारा का उदय

- क्रांति के दौरान जेकोबिन्स ने समाज के निम्न वर्ग के कल्याण के लिए अनेक कानूनों का निर्माण किया।
- इसी दल के सदस्य बबूफ को 'समाजवाद का संस्थापक' माना जाता है।
- उसने एक कार्यक्रम घोषित किया जिसके तहत सभी निजी संसाधनों व उद्योगों पर राज्य का नियंत्रण होना चाहिए। तथा मजदूर वर्ग के हितों के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

8. नकारात्मक प्रभाव

(i) राजनैतिक अस्थिरता

(ii) जन-धन की भारी क्षति

(iii) तानाशाहों का उदय-रॉब्सपियर एवं नेपोलियन

5 नेपोलियन

- नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ईस्वी को कोर्सिका टापू पर हुआ।
- 1793 ईस्वी में इसने तुलो बन्दरगाह को इंग्लैण्ड से मुक्त करवाया।
- 1795 ईस्वी में इसने पेरिस की भीड से नेशनल कन्वेंशन की रक्षा की।
- 1796 ईस्वी इसने इटालियन अभियान का नेतृत्व किया एवं पोप के क्षेत्रों को विजित किया।
- 1797 ईस्वी में इसने ऑस्ट्रिया को पराजित किया एवं ''केम्पाफोर्मियो'' की संधि की।
- 1798 ईस्वी में इसने मिश्र का अभियान किया।

  इसने यहाँ 2 युद्ध लड़े-

  (i) पिरामिडों का युद्ध - फ्रांस v/s मिस्र

  (ii) नील नदी का युद्ध - फ्रांस v/s इंग्लैण्ड

  इस युद्ध में अंग्रेजी कमान्डर नेल्सन ने नेपोलियन को पराजित किया।
- 1799 ईस्वी में यूरोप के देशों ने फ्रांस के विरूद्ध एक संघ का निर्माण किया। नेपोलियन वापस फ्रांस लौट आया। तथा डायरेक्ट्री शासन का तख्तापलट कर दिया। इसमें इसके भाई लुसिया ने सहायता की।
- अब फ्रांस में ''काउंसल व्यवस्था'' की स्थापना की गई। इसमें नेपोलियन प्रथम काउन्सल बना।
- 1801 ईस्वी में नेपोलियन ने जनमत सर्वेक्षण करवाया और स्वयं को आजीवन प्रथम काउन्सल घोषित कर दिया।

  इसने ऑस्ट्रिया को पुनः पराजित किया तथा ''ल्युनविले की संधि'' की।
- 1802 ईस्वी में ''आमिया की संधि,'' इंग्लैण्ड के साथ युद्ध विराम हेतु हुई।
- 1804 ईस्वी - नेपोलियन का राज्याभिषेक नैत्रोदम चर्च (स्थान) में पोप की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

नेपोलियन के सुधार कार्य

1. आर्थिक सुधार

(1) राजकोषीय सुधार

(i) इसने मितव्ययता की नीति अपनाई व अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाई।

(ii) आय को बढ़ाने के लिए इसने कर व्यवस्था को नवीनीकृत किया।

(iii) केन्द्रीय कर अधिकारियों की नियुक्ति की गई और प्रत्यक्ष रूप से कर वसूल किये गये।

(2) वित्तीय सुधार

(i) बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना (मुद्रा जारी करने के सभी अधिकार इसे दिये गये।)

(ii) इसने स्टॉक एक्सचेंज पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

(3) कृषि सुधार

(i) बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि बनाने के प्रयास किए गये।

(ii) सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाया गया।

(iii) किसानों को भूमि का स्वामित्व दे दिया गया।

(iv) राज्य के द्वारा किसानों को समय-समय पर सहायता प्रदान की गई।

(v) किसानों पर से कर की दर को कम कर दिया गया। इसलिए किसानों का कहना था कि - ''बूर्बोवंश के राजा फ्रांस के राजा होते थे, जबकि नेपोलियन हमारा राजा है।''

(4) व्यावसायिक सुधार

(i) परिवहन के साधनों को प्रोत्साहन दिया गया।

(ii) इसने उत्पादकों को नयी मशीनों के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया।

(iii) फ्रांस के उत्पादों को लोकप्रिय बनाने के लिए इसने अनेक प्रदर्शनियों का आयोजन करवाया।

(5) रोजगार संवर्धन के कार्य

सड़कों, पुलों, नहरों, बाँधों एवं सरकारी ईमारतों का निर्माण करवाया।

(6) आर्थिक सुधारों की कमियाँ

(i) औद्योगिक क्रांति के महत्व को नहीं जान सका।

(ii) इसने एक अतार्किक प्रणाली को अपनाया (महाद्वीपीय व्यवस्था)

2. प्रशासनिक सुधार

(i) प्रशासनिक तंत्र को सुसंगठित किया।

(ii) केन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की।

(iii) सभी स्तरों पर अधिकारियों की नियुक्ति नेपोलियन स्वयं करता था।

(iv) योग्यता के आधार पर इसने नियुक्तियाँ प्रदान की।

- **कमियाँ**

(i) स्थानीय स्वायत्तता के तत्व समाप्त हो गये।

(ii) इसके माध्यम से अपनी निरंकुशता स्थापित कर दी।

3. शिक्षा संबंधी सुधार

(i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई।

(ii) सार्वजनिक शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

(iii) विभिन्न स्तरों पर विद्यालयों की स्थापना की गई।

(iv) पर्याप्त मात्रा में शिक्षकों की नियुक्ति की गई।

(v) शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए विद्यालय स्थापित किए गए।

(vi) नया पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया।

(vii) शिक्षा विभाग के रूप में 'यूनिवर्सिटे' की स्थापना की गई।

(viii) अनुसंधान कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रांस स्थापित किया गया।

(ix) नेपोलियन की शिक्षा पद्धति सैनिक आदर्शों पर आधारित थी। इसके समय विद्यालयों को ''राष्ट्रवाद की शिशु पाठशालाएँ'' कहा जाता था।

- **कमियाँ**

इसने महिला (प्राथमिक शिक्षा का समर्थक) शिक्षा को महत्व नहीं दिया।

4. न्यायिक सुधार

- नेपोलियन ने प्रशासनिक कुशलता के लिए कानूनों की एकरूपता व स्पष्टता के महत्व को समझा।

- **नेपोलियन ने 5 कानून संहिंताओं का निर्माण किया–**
  (i) नागरिक संहिता (Civil Code)
  (ii) नागरिक प्रक्रिया संहिता
  (iii) दण्ड संहिता (Penal Code)
  (iv) अपराधमूलक प्रक्रिया संहिता
  (v) वाणिज्यिक संहिता (Commercial Code)
- इन सभी को नेपोलियन कोड कहा जाता था।

न्यायिक सुधारों की विशेषताएँ

(i) एकरूपता व स्पष्टता
(ii) विधि की श्रेष्ठता
(iii) कानून के समक्ष समानता
(iv) धर्म निरपेक्षता
(v) ज्यूरी के द्वारा सुनवाई की व्यवस्था
(vi) विवाह जैसे विषय को सिविल मुद्दा बना दिया गया।
(vii) परिवार के सारे अधिकार पुरुष मुखिया को दे दिये गये।
(viii) इन कानूनों में पूँजीपतियों को अधिक महत्व दिया गया।

आलोचनाएँ

(i) ये कानून महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण थे।
(ii) नेपोलियन पूँजीवादी मानसिकता का समर्थक था।
(iii) इसने तलाक प्रक्रिया को जटिल बना दिया।
(iv) नेपोलियन की कानून संहिताएँ अत्यधिक संक्षिप्त थी।

5. धार्मिक सुधार

1801 ईस्वी में नेपोलियन ने पोप के साथ समझौता किया, इसे ''कोंकोर्दा'' कहा जाता है।

प्रावधान

(i) नेपोलियन ने कैथोलिक धर्म को राज्य का धर्म स्वीकार कर लिया।
(ii) जेल में बंद पादरियों को मुक्त कर दिया गया।
(iii) देश छोड़कर भागने वाले पादरियों को वापस लौटने की अनुमति दे दी गई।
(iv) पादरियों की नियुक्ति का अंतिम अधिकार चर्च को दिया गया। लेकिन इनके नाम का प्रस्ताव राज्य के द्वारा दिया जा रहा था।
(v) चर्च ने राज्य के द्वारा छीनी गई सम्पति को मान्यता प्रदान की।
(vi) पादरियों को राज्य के लिए राज्य के संविधान में आस्था की शपथ लेनी अनिवार्य थी।
(vii) पादरियों का वेतन राज्य के द्वारा दिया जाना था।

परिणाम

(i) बहुसंख्यक कैथोलिक जनता नेपोलियन की समर्थक हो गई।
(ii) चर्च व राज्य के बीच चला आ रहा विवाद समाप्त हो गया।
(iii) कट्टर कैथोलिक लोग नेपोलियन के विरोधी हो गये।

6. पेरिस का विकास

नेपोलियन ने पेरिस के सौन्दर्य व समृद्धि को बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किये।

नेपोलियन की सफलता के कारण

(i) तात्कालिक परिस्थितियाँ

(ii) कार्य/उपलब्धियाँ

(iii) व्यक्तित्व की विशेषता

1. तात्कालिक परिस्थितियाँ

प्रत्येक क्रांति कुछ आदर्शों से प्रेरित होने के बावजूद एक सीमा तक अनियंत्रित एवं हिंसक तत्वों से युक्त होती है, यहीं कारण है कि "क्रांति के गर्भ से तानाशाहों का उदय होता है।"

क्रांति से फ्रांस की जनता को अत्यधिक उम्मीदें थी लेकिन जब ये उम्मीदे पूरी नहीं हुई, तो फ्रांस की जनता निराश हो गई। तथा इसी निराशा में ये तानाशाही को स्वीकार करने के लिए तैयार हो गये।

अराजकता के दौर में धनी लोग सुरक्षा चाहते थे, साहसी लोग विजय चाहते थे, भगोड़े वापस आना चाहते थे, क्रांतिकारी सजा से बचना चाहते थे तथा गरीब लोग सहायता चाहते थे। तथा नेपोलियन इन सभी की इच्छाओं का समन्वय था।

2. नेपोलियन के कार्य/उपलब्धियाँ

(i) नेपोलियन ने प्रथम काउन्सल बनकर राजनैतिक स्थिरता स्थापित की।

(ii) चर्च के साथ समझौता।

(iii) युद्धों में विजय प्राप्त की।

(iv) नेपोलियन के सुधार कार्य-

उदाहरण : शिक्षा, आर्थिक, कानूनी।

(v) नेपोलियन ने अपनी सफलता के लिए संचार के साधनों का भी सहारा लिया।

इसलिए आम फ्रांसीसी नेपोलियन को ''अपराजेय,'' ''भाग्य का पुत्र'' और ''ईश्वर के अवतार'' के रूप में देखने लगें।

3. नेपोलियन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

(i) वीर योद्धा

(ii) कुशल रणनीतिकार

(iii) कुशल प्रशासक

(iv) दूरदर्शी सुधारक

1805 ईस्वी में यूरोप के देशों ने एक संघ का निर्माण कर लिया।

युद्ध

1. ट्रेफेंगलर का युद्ध [1805 ईस्वी]

ब्रिटेन v/s फ्रांस

- यह एक नौसैनिक युद्ध था।
- इस युद्ध में नेल्सन ने नेपोलियन को पराजित किया।

2. आस्टरलित्स का युद्ध [1806 ईस्वी] (तीन सम्राटों का युद्ध)

- नेपोलियन ने यह युद्ध जीता तथा ''**प्रेसबर्ग की सन्धि**'' की-
  - (i) राइन संघ का निर्माण
  - (ii) पवित्र रोमन साम्राज्य का अंत
- 1806 ईस्वी में नेपोलियन ने प्रशा पर आक्रमण किया, इसने यहां से ''बर्लिन आज्ञप्तियाँ'' जारी की, जो इसकी महाद्वीपीय प्रणाली थी।

महाद्वीपीय प्रणाली/व्यवस्था

- यह इंग्लैण्ड को आर्थिक रूप से पराजित करने की नेपोलियन की रणनीति थी।
- नेपोलियन इंग्लैण्ड की नौसेना को कमजोर करना चाहता था। इसके लिए वह इंग्लैण्ड के व्यापार को नष्ट करना चाहता था।

बर्लिन आज्ञप्तियाँ

- नेपोलियन ने घोषणा की, कि कोई भी यूरोपीय जहाज जो ब्रिटेन के बन्दरगाह पर रूकेगा उसे फ्रांस के द्वारा जब्त कर लिया जायेगा।
- नेपोलियन ने यूरोप के अन्य देशों को इसे लागू करने के लिए बाध्य किया।

3. फ्रिडलैण्ड का युद्ध [1807 ईस्वी]

फ्रांस v/s रूस **(टिलसित की संधि)**

4. 1808 ईस्वी में नेपोलियन ने स्पेन की सहायता से पुर्तगाल पर अधिकार कर लिया।

- इसी वर्ष नेपोलियन ने **स्पेन** पर भी अधिकार कर लिया।
- इस घटना के कारण स्पेन में उग्र राष्ट्रवाद का उदय हुआ तथा नेपोलियन एक **अंतहीन युद्ध** में उलझ गया।
- 1809 ईस्वी नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया पर पुनः आक्रमण किया तथा ऑस्ट्रिया की राजकुमारी से विवाह किया।

5. 1812 ईस्वी "रूस का अभियान"

- नेपोलियन का यह अभियान असफल रहा।
- इसने बिना किसी युद्ध के अपने 5 लाख सैनिक खो दिये।
- अतः अब इसकी स्थिति कमजोर हो गई।

6. लिपजिंग का युद्ध [1813 ईस्वी]

- यूरोप के देशों ने एक संघ बनाया तथा नेपोलियन पर आक्रमण किया।
- इस युद्ध में नेपोलियन पराजित हुआ।
- उसे पद से हटा दिया गया तथा एल्बा द्वीप का सम्राट बना दिया गया।
- अब लुई-18वां को फ्रांस का राजा बना दिया गया।
- 10 माह के बाद नेपोलियन फ्रांस लौटता है।
- इसने "पेरिस मार्च" के जरिए पुनः सत्ता प्राप्त की।
- अब उसने 100 दिन तक शासन किया।

7. वाटरलू का युद्ध [1815 ईस्वी]

- इस युद्ध में नेपोलियन पराजित हुआ।
- इस बार उसे सेंट हेलेना द्वीप भेज दिया गया। जहाँ 1821 ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गयी।

नेपोलियन के पतन के कारण

नेपोलियन की भूलों ने ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया जिनके कारण उसका पतन हो गया, वे निम्नानुसार है-

1. महाद्वीपीय प्रणाली

इस प्रणाली की असफलता के अनेक कारण थे-

(i) यह अतार्किक एवं अवैज्ञानिक थी इसलिए इसे किसी ने भी स्वीकार नहीं किया।

(ii) इसे लागू करने के लिए शक्तिशाली नौसेना की आवश्यकता थी, जो फ्रांस के पास नहीं थी, बल्कि इंग्लैण्ड के पास थी।

(iii) महाद्वीपीय प्रणाली के प्रतिक्रियास्वरूप इंग्लैण्ड ने 1807 ईस्वी में "ऑडर्स इन काउंसिल" जारी किए।

(iv) इन व्यवस्थाओं के कारण यूरोप का व्यापार अवरूद्ध हो गया। इसके कारण यूरोप में मुद्रास्फीति की समस्या उत्पन्न हो गई।

(v) अब यूरोप की जनता एवं शासक नेपोलियन के विरूद्ध हो गए एवं समपूर्ण यूरोप में राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न हो गयी। (नेपोलियन के विरूद्ध)

(vi) इस पद्धति के कारण नेपोलियन को अनेक युद्ध करने पड़े।

2. स्पेन का नासूर

1808 ईस्वी में स्पेन ने नेपोलियन के विरूद्ध विद्रोह कर दिया तथा नेपोलियन अपने जीवन में इसका दमन नहीं कर पाया।

स्पेन में असफलता के कारण

(i) राष्ट्रवाद की भावना का उदय

(ii) स्पेन की भौगोलिक परिस्थितियाँ

(iii) स्पेन के द्वारा अपनाई गई ''छापामार युद्ध पद्धति''।

(iv) इंग्लैण्ड का समर्थन

(v) नेपोलियन द्वारा स्पेन का चार भागों में विभाजन

(vi) इसने अपनी पूरी शक्ति के साथ स्पेन पर आक्रमण नहीं किया।

3. रूस का अभियान

नेपोलियन ने आक्रमण के लिए सही समय नहीं चुना।

4. अत्याधिक युद्धों में रत रहना

इतिहास कार काब्बन ने कहा था कि "नेपोलियन का साम्राज्य युद्धों के बीच जन्मा, युद्धों में ही पला और युद्धों के कारण ही समाप्त हो गया।"

नेपोलियन ने स्वयं कहा कि "लगातार युद्ध लड़ते रहना मेरी नियति है।" क्योकि वह जानता था कि 'शांतिकाल में फ्रांस की जनता उसके शासन पर प्रश्नचिह्न लगायेगी। अतः वह इन्हें लगातार युद्धों एवं उग्र राष्ट्रवाद में व्यस्त रखना चाहता था।'

5. नेपोलियन की चारित्रिक दुर्बलताएँ

नेपोलियन में आंतरिक शांति का अभाव था-

कारण

(i) यह मध्यमवर्गीय कुण्ठा से ग्रसित था।

(ii) वह अपने पद को लेकर सदैव आशंकित रहता था।

(iii) उसे हमेशा फ्रांसीसी जनता के विद्रोह का डर बना रहता था।

(iv) यह अपने उत्तराधिकार के विषय में आशंकित रहता था।

(v) वह मित्र नहीं बना पाया, क्योंकि नेपोलियन से लोग या तो प्रभावित होते थे, या भयभीत होते थे।

(vi) नेपोलियन क्रूर, अहंकारी, दमनकारी व्यक्ति था।

(vii) उसे अपने परिवार का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ।

नेपोलियन क्रांति का पुत्र या क्रांति का हन्ता था?

- नेपोलियन क्रांति की संतान माना जाता है, क्योंकि क्रांतिकालीन विभिन्न परिस्थितियों ने उसके उदय में योगदान दिया।
- दूसरे संदर्भों में जिस प्रकार एक पुत्र वंश परम्पराओं को आगे बढ़ाता हैं, नेपोलियन ने भी क्रांति के आदर्शों को आगे बढ़ाया और उन्हें प्रोत्साहन दिया।

- **इस सन्दर्भ में क्रांति के 3 आदर्श थे–**

1. स्वतंत्रता

- नेपोलियन ने नागरिक स्वतंत्रता को महत्व को नहीं दिया। इसने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पूरी तरह समाप्त कर दिया।
- नाट्यशालाओं पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- उसने समाचार-पत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- जोसेफ फाउचे ने पूरे फ्रांस में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया।
- वैचारिक मतभेद रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को जेल भेज दिया गया।
- नेपोलियन ने स्वतंत्रता के आदर्श को लागू नहीं किया तथा स्वयं के कार्यों को सही ठहराने के लिए उसने परिस्थितियों की मनमानी व्याख्याएं की, **जैसे** – उसका कहना था कि ''फ्रांस की जनता स्वतंत्रता नहीं समानता चाहती है।''

2. समानता

- नेपोलियन ने एक सीमा तक समानता के आदर्श को बनाये रखने का प्रयास किया।
- उसने विशेषाधिकारों को वापस लागू नहीं किया।
- राज्य की सेवाओं में सभी को अवसर की समानता प्रदान की।
- कानून के समक्ष सभी को समानता का दर्जा दिया।
- सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था की गई।
- किसानों को भूमि पर अधिकार दिया गया।

अपवाद :

(i) इसने अपनी निरकुंश सत्ता स्थापित की तथा स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित किया।

(ii) उसने अपने परिवार के सदस्यों को उच्च पद प्रदान किए।

(iii) उसने अपने परिवार के सदस्यों को कुलीन बनाने का प्रयास किया तथा उन्हें विशेषाधिकार प्रदान किया।

(iv) यद्यपि उसने समानता के आदर्श को लागू करने का प्रयास किया, पर वह असफल रहा।

3. बन्धुत्व

- नेपोलियन ने अपने साम्राज्यवादी युद्धों की बदौलत पूरे यूरोप को युद्ध क्षेत्र में धकेल दिया तथा यूरोप की आपसी शांति और सौहार्द को ध्वस्त कर दिया।
- वह यूरोप के सभी देशों को अपना गुलाम बनाना चाहता था, जो कि क्रांति के बंधुत्व रूपी आदर्श के पूर्णतः विपरीत था।

अतः हम मान सकते हैं कि नेपोलियन ने क्रांति के आदर्शों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया।

6 औद्योगिक क्रांति

- 1750 ई. के बाद यूरोप में निर्माण, उत्पादन और वितरण प्रणालियों में व्यापक परिवर्तन हुए, जिसके परिणामस्वरूप कृषि प्रधान समाज तेजी से मशीन आधारित औद्योगिक समाज में परिवर्तित हो गया।
- ये परिवर्तन इतने तीव्र एवं नवीन थे इन्हें ''औद्योगिक क्रांति'' की संज्ञा दी गई।
- औद्योगिक क्रांति की शुरूआत 'इंग्लैण्ड'' से हुई।
- इसका प्रारंभिक प्रभाव क्षेत्र 'वस्त्र उद्योग' था।
- प्रतीकात्मक रूप से इसका आरंभ 1769 ई. में वाटरफ्रेम (रिचर्ड आर्कराइट) के आविष्कार से माना जाता है।
- औद्योगिक क्रांति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी समाजवादी विचारकों द्वारा किया गया।
- **औद्योगिक क्रांति के लिए चार क्षेत्रों में हुए व्यापक परिवर्तन उत्तरदायी थे-**

(i) जनांकिकीय क्रांति :

1740 ई. के दशक में यूरोप की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई, इससे वस्तुओं की मांग व कीमत बढ़ी इससे उत्पादक प्रोत्साहित हुए तथा उन्हे नवाचारों की आवश्यकता महसूस हुई।

(ii) कृषिगत क्रांति :

यूरोप में कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों जैसे - खेतों का एकीकरण कृषिगत क्षेत्र का विस्तार तथा गहन पशुपालन आदि के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के उत्पादन एवं आय में वृद्धि हुई।

(iii) व्यावसायिक क्रांति :

इस समय यूरोप के विदेश व्यापार में वृद्धि हो रही थी इससे कच्चे माल की उपलब्धता निर्मित माल हेतु बाजार एवं पूँजी की उपलब्धता में वृद्धि हुई।

(iv) परिवहन क्रांति :

यूरोप में सड़कों, रेलों, नहरों, पुलो व बंदरगाहों का तेजी से निर्माण हुआ। जिसने पूँजी निर्माण को गति प्रदान की।

औद्योगिक क्रांति की शुरूआत इंग्लैण्ड से ही क्यों हुई ?

1. कृषि सुधार

कृषिगत सुधारों के कारण कृषक भूमिहीन हो गये थे ये शहरों की तरफ पलायन कर गये थे इससे उद्योगों के लिए सस्ता श्रम उपलब्ध हो गया।

कृषि क्षेत्र में तकनीकी सुधार के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की आय व इनका उत्पादन बढ़ गया।

2. इंग्लैण्ड की भौगोलिक अवस्थिति

इंग्लैण्ड यूरोप से पृथक था तथा यह यूरोप के आंतरिक मामलों में स्वयं को अलग रखने में सफल रहा, जिससे इसका पूरा ध्यान स्वयं के विकास पर केन्द्रित रहा।

3. लोहे एवं कोयले की खानों का पास-पास होना

इंग्लैण्ड में लोहे एंव कोयले की खाने न केवल उपलब्ध थी बल्कि पास-पास भी अवस्थित थी। इसने इस्पात निर्माण को सुगम बना दिया।

4. इंग्लैण्ड में शांति एवं व्यवस्था

यूरोप के अन्य देशों से अलग इंग्लैण्ड शांतिपूर्ण तरीके से व्यवस्थित था इससे इंग्लैण्ड में व्यापार एवं उद्योगों को विकास का अवसर मिला।

5. इंग्लैण्ड का विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य

इससे इंग्लैण्ड को उद्योगो हेतु आवश्यक कच्चा माल, पूँजी एवं तैयार माल हेतु विस्तृत बाजार उपलब्ध हुआ।

6. शक्तिशाली नौसेना

इंग्लैण्ड के पास विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य एवं समुद्री व्यापार की सुरक्षा के लिए शक्तिशाली नौसेना थी। जिसने व्यापार की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

7. इंग्लैण्ड का मुक्त समाज

इंग्लैण्ड में कृषि दासता एवं श्रेणी व्यवस्था समाप्त हो चुकी थी, जिससे समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बल दिया।

अब प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार उद्योग स्थापित करने के लिए स्वतंत्र था।

8. अर्द्धकुशल कारीगरों की उपलब्धता

कृषि दासता, सामन्तवादी व्यवस्था एवं श्रेणी व्यवस्था की समाप्ति पर बहुत से अंग्रेज कस्बों की ओर पलायन कर गये तथा वहां हस्त कौशल के कार्यो में लग गये।

औद्योगिक क्रांति के दौरान यही लोग मशीनों पर कार्य करने के लिए उपलब्ध हो गए।

9. काली मृत्यु/प्लेग

- प्लेग के कारण 18 वीं शताब्दी के अंत में लाखों लोग मारे गए।
- इससे कृषकों एवं मजदूरों की कमी हो गई।
- अब इन पर श्रेणी व्यवस्था का नियंत्रण कमजोर हो गया तथा अनेक कारीगरों ने अपने स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित कर लिए।

10. वैज्ञानिक आविष्कारों को प्रोत्साहन

आविष्कारों का आविष्कार इंग्लैण्ड में हुआ। क्योंकि ''इंगियश रॉयल सोसायटी'' ने आविष्कारों को प्रोत्साहन दिया।

इसके लिए वहाँ का राजनैतिक एवं धार्मिक हस्तक्षेपों से मुक्त वातावरण भी सहयोगी रहा।

11. पूँजी की उपलब्धता

इंग्लैण्ड में औद्योगिकीकरण हेतु आवश्यक पूँजी उपलब्ध थी। क्योंकि इंग्लैण्ड ने विस्तृत औपनिवेशिक साम्राज्य से अत्यधिक लाभ कमाया था तथा बचत की भावना से वहां पर्याप्त मात्रा में पूँजी उपलब्ध थी।

रजनीपाम दत्त की इण्डिया टुडे के अनुसार यदि प्लासी की लूट का माल और भारत की सम्पदा इंग्लैण्ड नहीं जाती तो इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति नहीं होती।

12. व्यापारी वर्ग का प्रभावी होना

इंग्लैण्ड का नव धनाढ्य वर्ग कुलीन न होकर व्यापारियों एवं सौदागारों का वर्ग था जो अपनी पूँजी को उद्योगो एवं अनुसंधानों में लगाने को तत्पर था।

13. बैंकिंग का विकास

इससे उद्योगपत्तियों को ऋण प्राप्त करने व धन जमा करने की सुविधा प्राप्त हुई।

14. मांग के अनुरूप उत्पादन

इंग्लैण्ड सामान्य जरूरत की वस्तुओं का उत्पादक था जिनके लिए मशीनीकरण लाभप्रद था।

15. फ्रांस की क्रांति एवं युद्धो का प्रभाव

नेपोलियन से युद्धों के दौरान इंग्लैण्ड को अपनी एवं सहयोगी देशों की सैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ा।

जिसके लिए उत्पादन के तरीकों में सुधार आवश्यक हो गया।

युद्ध के पश्चात् उत्पन्न बेकारी को दूर करने का एकमात्र उपाय भी उद्योग धन्धो का विकास ही था।

औद्योगिक क्रांति के क्षेत्र

(I) कृषि क्षेत्र

(i) **जेथ्रो टुल :** मशीन - सीड ड्रील

(ii) **टाउनशैण्ड :** फसल चक्रण पद्धति

(iii) **आर्थर यंग :** वैज्ञानिक कृषि की शुरूआत

(iv) **जस्टस वॉन लीबिंग (जर्मनी के)** : रासायनिक खाद

(v) **एली व्हिटने** : थ्रेसिंग मशीन

(vi) **सायरस एच मैकोरमिक** : फसल काटने वाली मशीन

(vii) **राबर्ट बेकवेल :** पशुनस्ल सुधार के कार्य

(viii) **चार्ल्स कोलिंग :** भेड़ की एक नई नस्ल तैयार की।

(II) वस्त्र उद्योग

(i) **1733 ई. जॉन के :** ''फ्लाइंग शटल'' (पहली मशीन)

(ii) **1764 ई. जेम्स हारग्रीब्ज :** स्पिनिंग जेनी (धागा बनाना) (8 धागे)

(iii) **1769 ई. रिचर्ड आर्कराइट :** वाटर फ्रेम (धागा बनता है, पानी की स्पीड से)

(iv) **1779 ई. सैम्युअल क्रॉप्टन :** स्पिनिंग म्यूल

(v) **एडमण्ड कार्टराइट (1785 ई.) :** पावरलूम (भाप शक्ति से चली थी, मैदानी क्षेत्रों में उपयोग, आधुनिक कारखानों की शुरूआत)

(vi) **एली व्हिटने (1793 ई.) :** कॉटन जिन

(vii) **एलियास होव (1846 ई.) :** सिलाई मशीन

(III) आधारभूत उद्योग

(1) **कोयला** :

1750 ई. में अब्राहम डर्बी तथा जॉन रोबक ने पत्थर के कोयले की खोज की ।

(2) **लोहा उद्योग**

(i) **हेनरी कोर्ट (1784 ई.)** : पडलिंग विधि

अधिक शुद्ध व अच्छा लोहा बनाना आसान हो गया।

(ii) **हेनरी बेसेमर (1856 ई.) :** ''बेसेमर प्रक्रिया'' की खोज

यह इस्पात निर्माण की विधि थी।

(iii) **न्यूकोमैन**

न्यूकोमैन ने कोयला खदानों से पानी निकालने के लिए ''वाष्प इंजन'' का आविष्कार किया।

(iv) **जेम्सवॉट**

1769 ई. में अधिक कुशल वाष्प इंजन का आविष्कार किया।

(IV) यातायात के क्षेत्र में

(1) स्थल यातायात

(i) **सड़क निर्माण**

मैकेडम ने एक सड़क निर्माण विधि का विकास किया, जिसे मैकेडमाइज्ड विधि कहा गया।

(ii) **रेलवे**

जॉर्ज स्टीफेंसन ने एक वाष्प इंजन का आविष्कार किया। यह लोहे की पटरियों पर चलता था। इंजन का नाम-रॉकेट रखा।

इसके परिणामस्वरूप 1830 ई. में लीवरपूल से मैनचेस्टर के बीच पहली ट्रेन चली।

(iii) 1839 ई. में चार्ल्स गुडईयर ने रबड़ के वल्कनीकरण की खोज की। इसने टायर निर्माण को संभव बना दिया।

(iv) 1880 ई. में पेट्रोल इंजन का निर्माण हुआ।

(2) जल यातायात

(i) **जेम्स ब्रिंडले (1761 ई.)** : ब्रिज वॉटर नहर का निर्माण। इससे परिवहन का खर्च आधा रह गया।

(ii) **रॉबर्ट फुल्टन (1807 ई.)** : प्रथम वाष्पचलित नौका का निर्माण किया। इसका नाम ''क्लैमोंट'' रखा गया।

(iii) 1830 ई. में ''सिरिअस'' नामक जहाज ने 18 दिन में अटलांटिक महासागर पार कर लिया।

(V) संचार के क्षेत्र में

(i) **रोलैण्ड हिल (1840 ई.)** : आधुनिक डाक व्यवस्था की स्थापना की।

(ii) **सैम्युअल मौर्स (1844 ई.)** : तार प्रणाली का आविष्कार

(iii) **ग्राहम बैल (1876 ई.)** : ''टेलीफोन'' का आविष्कार

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

1. अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

	सकारात्मक	नकारात्मक
(i)	मशीनों का प्रयोग	परम्परागत उद्योग धन्धे नष्ट
(ii)	उत्पादन में वृद्धि	बेरोजगारी में वृद्धि
(iii)	व्यापार-वाणिज्य मे वृद्धि	आर्थिक शोषण में वृद्धि
(iv)	आय में वृद्धि	आर्थिक संकटो का दौर
(v)	मुद्रा व पूँजी बाजार का विकास	
(vi)	औद्योगिक पूँजीवाद का विकास	
(vii)	नगरों का विकास	
(viii)	यातायात के साधनों का विकास	
(ix)	राष्ट्रीय बाजारों का विकास	

2. समाज पर प्रभाव

	सकारात्मक	नकारात्मक
(i)	जीवन प्रत्याशा में वृद्धि/जीवन स्तर में वृद्धि	शहरों की ओर पलायन
(ii)	जनसंख्या में वृद्धि / शहरीकरण में वृद्धि	संयुक्त परिवारों का पतन
(iii)	शिक्षा के प्रति जागरूकता	व्यक्ति का भौतिक पक्ष प्रबल
(iv)	मनोरंजन के साधनों का विकास	नैतिक स्तर में गिरावट
(v)	नए सामाजिक वर्गो का उदय (बुर्जुआ एवं सर्वहारा)	पर्यावरणीय समस्याएँ।

3. राजनैतिक प्रभाव

	सकारात्मक	नकारात्मक
(i)	शहरी जनसंख्या में वृद्धि तथा झुग्गी झोपड़ियों का विकास हुआ।	उपनिवेशवाद का उदय
(ii)	राज्य की भूमिका में वृद्धि हुई।	साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा
(iii)	कल्याणकारी	विश्वयुद्ध
(iv)	कार्यो की शुरूआत जैसे- कारखाना एक्ट	दो प्रतिद्वन्द्वी विचारधाराओं का उदय
(v)	उदारवादी शासन व्यवस्था की स्थापना	शीतयुद्ध का उदय
(vi)	अन्तर्राष्ट्रवाद की भावना का विकास	
(vii)	नवीन राजनैतिक विचारधाराओं का उदय हुआ,	
	जैसे - समाजवाद, साम्यवाद आदि।	

7 उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद

उपनिवेशवाद

जब एक शक्तिशाली राष्ट्र किसी निर्बल देश की आर्थिक गतिविधियों पर नियंत्रण स्थापित कर उन्हें अपने हितों के अनुसार नियमन एवं संचालन करता है तो उसे उपनिवेशवाद कहा जाता है।

साम्राज्यवाद

जब शक्तिशाली राष्ट्र निर्बल देश की आर्थिक गतिविधि के साथ-साथ राजनीतिक व सांस्कृतिक गतिविधि पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर ले तो यह साम्राज्यवाद कहलाता है।

कारण/प्रेरक तत्व-

(i) पुनर्जागरण

(ii) भौगोलिक खोजें

(iii) वैज्ञानिक आविष्कार

(iv) धर्म सुधार आंदोलन

(v) राष्ट्रीय राज्यों का उदय

(vi) समुद्री अभियान

(vii) आरंभिक शोषणकारी प्रवृत्तियाँ

(viii) वाणिज्यवाद

- साम्राज्यवाद में सैनिक तत्व भी महत्वपूर्ण रूप से मौजूद था जिसके द्वारा-उपनिवेशों पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित कर अपनी नीतियों का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया गया।
- अमेरिकी स्वतंत्रता से उपनिवेशवादी प्रवृतियों को झटका लगा, इसलिए इन्होनें अपनी परम्परागत नीतियों में बदलाव किया।
- अब तक यह माना जाता था कि उपनिवेश मातृ देश के लाभ के लिये होते है, लेकिन अब यह स्वीकार किया गया कि उपनिवेशों एवं मातृ देशों के हित अनुपूरक है।
- अब उन्होंने अपनी नीतियों का विकास इस विश्वास के आधार पर किया कि 'उपनिवेश फलों के समान होते है, जो पकने के पश्चात् वृक्ष से अलग हो जाते है।'

इनकी नीतियों में परिवर्तन

(i) अब एडम स्मिथ की ''लेसेज फेयर'' की नीति को लागू किया गया।

(ii) आर्थिक प्रतिबंधों को यथासंभव समाप्त कर दिया गया।

(iii) नेवीगेशन कानूनों को समाप्त कर दिया गया।

(iv) उपनिवेशों में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने व शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए उपाय किये गए।

(v) उत्तरदायी शासन की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया गया तथा लोकप्रिय संस्थाओं का विकास किया गया।

उदाहरण : ऑस्ट्रेलिया, कनाडा व न्यूजीलैण्ड को स्वायत्तता प्रदान की गई।

- ये उदार नीतियाँ केवल विकसित उपनिवेशों के संदर्भ में अपनाई गई, जबकि एशिया व अफ्रीका के पिछड़े हुए उपनिवेशों के संदर्भ में इस नीति का पालन नहीं किया गया।

नव-साम्राज्यवाद

- 1870 ई. में इटली एवं जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् साम्राज्यवाद में एक नये युग की शुरूआत हुई।
- इसमें पुराने उद्देश्य एवं विशेषताएँ यथावत् रही तथा साथ ही एक नया उद्देश्य राजनीतिक शक्ति विस्तार करना इसमें जुड़ गया।
- इस समय शक्तिशाली राष्ट्र साम्राज्यवाद को आवश्यक एवं स्वाभाविक घटना के रूप में प्रस्तुत करते है।
- नव साम्राज्यवाद हितों की अपेक्षा प्रतिष्ठा का उपकरण बन जाता है।

1. नव-साम्राज्यवाद की विशेषताएँ

(i) इटली व जर्मनी जैसे नवोदित राष्ट्र का उपनिवेशवाद की दौड़ में शामिल होना।

(ii) साम्राज्य की भावना का यूरोप के बाहर विस्तार/प्रसार होना। अब गैर यूरोपीय राष्ट्र भी इस दौड़ में शामिल हुए, **जैसे :** अमेरिका तथा जापान।

(iii) बढ़ती हुई सैन्य प्रवृत्ति के कारण नव-साम्राज्यवाद अत्यधिक उग्र था।

(iv) आर्थिक एकाधिकारवादी प्रवृत्ति अधिक तीव्र हो गई।

(v) अफ्रीका का तीव्र एवं शान्तिपूर्ण विभाजन।

2. नव-सम्राज्यवाद के उदय के कारण

(1) आर्थिक कारण

(i) औद्योगिक क्रांति व अत्यधिक उत्पादन के कारण यूरोप में बाजारों की आवश्यकता महसूस की गई। जिसकी पूर्ति उपनिवेशवाद से संभव है।

(ii) अनाज एवं कच्चे माल दोनों की आवश्यकताएँ उपनिवेशवाद के माध्यम से पूरी की जा सकती थी।

(iii) यातायात व संचार के साधनों के विकास के कारण सुदूर क्षेत्रों में उपनिवेश स्थापित करना एवं उन पर नियंत्रण रखना आसान हो गया।

(iv) यूरोप की बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इसके निवास एवं रोजगार की समस्या उत्पन्न हुई, इसका समाधान उपनिवेशवाद के माध्यम से किया जा सकता था।

(v) विनियोग की सुरक्षा के मुद्दे के कारण साम्राज्यवाद अधिक उग्र होता जा रहा था।

(2) राजनीतिक कारण

(i) उपनिवेशों व साम्राज्यों को राष्ट्रीय गौरव व प्रतिष्ठा के रूप में देखा जाता था तथा इटली, जर्मनी व जापान जैसे राष्ट्र गौरवशाली राष्ट्र के रूप में पहचान प्राप्त करना चाहते थे।

(ii) ब्रिटेन अपनी अग्रणी साम्राज्यवादी देश के रूप में पहचान बनाये रखना चाहता था।

(iii) फ्रांस नव-साम्राज्यवाद के माध्यम से अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापस प्राप्त करना चाहता है। (1870 ई. का सेडान का युद्ध)

(iv) इसके अलावा यूरोपीय देशों में अनेक दबाव समूह थे जो साम्राज्य की स्थापना के लिए अपनी सरकारों पर दबाव निर्मित कर रहे थे।

उदाहरण : व्यापारी वर्ग, जहाज निर्माता उद्योग, सैनिक साजो-समान बनाने वाला उद्योग/वर्ग

(3) धार्मिक कारण

मध्यकाल में ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी साम्राज्यवाद की राह को आसान किया-

तरीके-

(i) नये क्षेत्रों की खोज के द्वारा

(ii) पाश्चात्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार के द्वारा इन्होंने यूरोपीय उत्पादों की माँग सृजित की।

(iii) जब नये क्षेत्रों में इनके साथ दुर्व्यवहार होता था तो साम्राज्यवादी देश वहाँ अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे।

(iv) इन्होंने साम्राज्यवाद को नैतिक समर्थन भी प्रदान किया,

जैसे - **नीतियाँ-**

- **इंग्लैण्ड की नीति** - श्वेत व्यक्ति का भार (रूडयार्ड किपलिंग - 'द जंगल बुक')
- इटली की नीति - पुनीत कर्तव्य
- फ्रांस की नीति - सभ्यता के विस्तार का कार्य
- महत्वपूर्ण धर्म प्रचारक - डॉक्टर डेविड लिविंगस्टोन (इंग्लैण्ड), कार्डिनल लेवीगेरी (फ्रांस)

(4) भौगोलिक खोजकर्ता

19वीं शताब्दी के अंत तक अनेक साहसी खोजकर्त्ताओं ने नए अनेक उपनिवेशों को खोज निकाला, जिससे साम्राज्य विस्तार में काफी सहायता प्राप्त हुई।

खोजकर्त्ता :

(i) **दु चालू** एवं **डिब्राजा (फ्रांस)** ⇒ इन्होंने अफ्रीका के भू-मध्य रेखीय क्षेत्र की खोज की।

(ii) हेनरी मार्टन स्टेनली (इंग्लैण्ड) - कांगो-बेसिन क्षेत्र की खोज

(iii) कार्ल पीटर्स (जर्मनी) - पूर्वी अफ्रीका की खोज

(iv) गुस्ताव नाक्टिगाल (जर्मनी) - केमरून व टोगोलैण्ड को जर्मन उपनिवेश बनाने का श्रेय

(5) साम्राज्यवाद के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

(i) 19वीं शताब्दी में एशिया व अफ्रीका की सरकारें बहुत कमजोर थी तथा शासन के पुराने तरीकों से संचालित थी।

(ii) यहाँ राष्ट्रीय राज्य का उदय नहीं हुआ था।

(iii) उत्पादन एवं सैन्य तकनीकी के क्षेत्र में भी ये पिछड़े हुए थे।

अफ्रीका का बँटवारा (1880-1914 ई.)

अफ्रीका की आरंभिक खोज का श्रेय धर्म प्रचारकों व अन्वेषकों को जाता है।

(i) डेविड लिविंगस्टोन इनमें सबसे महत्वपूर्ण था इसने विक्टोरिया एवं न्यासा झीलों की खोज की। ,

(i) 1871 ई. में हेनरी मार्टन स्टेनली ने कांगो नदी की खोज की। इसने अपनी किताब 'थ्रू द डार्क कॉन्टिनेन्ट' में अफ्रीका के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

बेल्जियम के शासक लियोपोल्ड द्वितीय ने स्टेनली के साथ मिलकर 'The International Association of the congo' नामक कंपनी की स्थापना की।

बंटवारे का प्रारंभ

(1) भूगोलवेत्ताओं का ब्रूसेल्स सम्मेलन (1876 ई.)

लियोपोल्ड II

उद्देश्य :

(i) अफ्रीका के महत्व पर प्रकाश डालना।

(ii) वहाँ अनुसंधान एवं व्यापार कार्य को प्रोत्साहित करना।

(iii) अफ्रीका में ईसाई सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार करना।

अब यूरोपीय देशों में अफ्रीका पर अधिकार करने की होड़ मच गई।

जैसेः
- 1881 ई. - फ्रांस ने ट्यूनीशिया पर अधिकार कर लिया।
- 1882 ई. - इंग्लैण्ड ने मिस्र पर अधिकार कर लिया।

(2) बर्लिन कान्फ्रेंस (1884-1885)

(i) उद्देश्य

- यूरोप के सौहार्द को बनाये रखना व विवादों का शांतिपूर्ण समाधान किया जा सकें।
- भविष्य में अफ्रीका के संबंध में स्पष्ट नीति व नियम निर्धारित करना।

(ii) निर्णय

- कांगो को फ्री स्टेट घोषित किया गया तथा सभी देशों को यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ संचालित करने की छूट दी गई।
- कांगो नदी घाटी में सभी देशो को नौ-संचालन की सुविधा दी गई।
- नाइजर नदी - उत्तरी भाग फ्रांस को दिया गया तथा दक्षिणी भाग ब्रिटेन को दिया गया।
- **भविष्य में अफ्रीका पर दावे के लिए दो शर्ते निर्धारित की गई-**

  (a) दावा वास्तविक होना चाहिए।

  (b) अपने दावें की तत्काल सूचना सभी देशों को दी जानी चाहिए।
- अफ्रीका के लोगों का भौतिक व नैतिक विकास/कल्याण मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया गया।

(3) अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेश

(i) **फ्रांस के उपनिवेश** : 40 लाख वर्गमील क्षेत्र

जैसे : मोरक्को, अल्जीरिया, सहारा, फ्रेंच इक्वेटोरियल अफ्रीका (फ्रेंच कांगो), मेड़ागास्कर, ट्यूनिशिया

(ii) **ब्रिटेन के उपनिवेश :** 33 लाख वर्गमील क्षेत्र

जैसे : इजिप्ट, सूडान, घाना, नाइजीरिया, रोडेशिया, दक्षिणी अफ्रीका संघ।

दक्षिणी अफ्रीका

(i) ब्रिटिश उपनिवेश

- केप कॉलोनी
- नटाल

(ii) डच उपनिवेश/बोअर

- ऑरेज फ्री स्टेट
- **ट्रांसवाल**

  1899 ई. $\Rightarrow$ बोअर युद्ध $\rightarrow$ इंग्लैण्ड v/s बोअर किसान नेता $\rightarrow$ पॉल क्रूगर

  1902 ई. $\Rightarrow$ वेरिनिजिंग की संधि

  1910 ई. $\Rightarrow$ दक्षिणी अफ्रीका संघ का निर्माण

(4) जर्मनी

टोगोलैण्ड, नामिबिया, कैमरून, तंजानिया

(5) इटली :

इरीट्रीया, सोमालिया, लिबिया

(6) पुर्तगाल

अंगोला, मोजाम्बिक

(7) स्पेन :

रायो-डी-ओरो व रायो मुनि

साम्राज्यवाद के प्रभाव

(1) उपनिवेशों पर प्रभाव

	नकारात्मक	सकारात्मक
(i)	उपनिवेश राजनीतिक स्वतंत्रता से वंचित थे।	पुनर्जागरण के आदर्शो का प्रसार
(ii)	आर्थिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया गया।	लोकतंत्र, धर्म, निरपेक्षता, मानववाद व राष्ट्रवाद की प्रवृत्तियों का विकास।
(iii)	सामाजिक रूप से शोषण व उत्पीड़न हुआ।	शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रगति।
(iv)	मूल निवासियों का उन्मूलन हुआ।	कृषि, उद्योग, परिवहन एवं संचार के साधनों का विकास।
(v)	सांस्कृतिक रूप से नुकसान हुआ।	

(2) साम्राज्यवादी देशों पर प्रभाव

	सकारात्मक	नकारात्मक
(i)	औद्योगिक क्रांति का उत्तरोत्तर विकास हुआ।	इनकी शोषक व उत्पीड़न की छवि विकसित हुई।
(ii)	आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हुई।	साम्राज्य की प्रतिस्पर्धा ने आपसी युद्धो को जन्म दिया।
(iii)	यूरोपीय लोगो के जीवन स्तर में सुधार हुआ।	दो विश्वयुद्ध लड़ने पड़े।
(iv)	यूरोप की राजनीतिक श्रेष्ठता स्थापित हुई।	युद्धो में जन-धन की हानि हुई।
(v)	यूरोप विश्व का नेता बन गया।	
(vi)	यूरोप के धर्म एवं सभ्यता का विस्तार पूरे विश्व में हुआ।	

8 प्रथम विश्वयुद्ध

प्रथम विश्व युद्ध के कारण [1914 – 1918 ईस्वी]

1. राष्ट्रवाद की भावना
2. राष्ट्रहितों में टकराव
3. कूटनीतिक संधियां व यूरोप का दो शिविरों में विभाजन

   ब्रिटेन द्वारा शानदार पृथकता की नीति को त्याग
4. सैन्यवाद और शस्त्रीकरण
5. उग्र राष्ट्रवाद
6. सामाजिक असंतुलन
7. साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा
8. सम्राट विलियम कैसर की भूमिका
9. समाचार पत्रों एवं प्रसार साधनों का प्रभाव
10. अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव होना
11. **अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता**

बाल्कन युद्ध

- बाल्कन प्रदेश पहले तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य का भाग था, कालांतर में गैर-तुर्क जातियों पर यहाँ निर्मम अत्याचार हुए , जिससे राष्ट्रवाद की भावना व स्वतंत्रता आन्दोलन ने जोर पकड़ा। इसी समय युवा तुर्क आन्दोलन की शुरूआत हुयी, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करना चाहता था।
- बाल्कन देश व तुर्की के मध्य तनाव बढ़ता गया।
- 1912 ईस्वी में बाल्कन संघ का निर्माण हुआ।
- तुर्की द्वारा मकदूनियां में सुधार करने से इंकार करने पर उस पर आक्रमण कर दिया गया।
- 1913 ईस्वी में लंदन की संधि हुई, जिसमें तुर्की का विघटन कर दिया गया।
- सर्बिया व बुल्गारिया के मध्य मकदूनियां के प्रश्न पर विवाद उत्पन्न होने से वर्ष 1913 ईस्वी में दूसरा बाल्कन युद्ध हुआ, जिसमें सर्बिया, यूनान एवं तुर्की मिलकर बुल्गारिया पर आक्रमण करते है तथा उसे पराजित करते है।

12. तात्कालिक कारण

- **सेराजेवो हत्याकाण्ड**

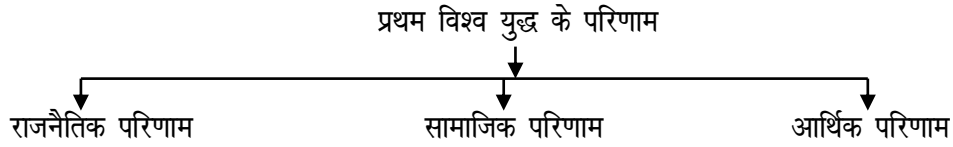

प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम

1. राजनैतिक परिणाम

- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था लोकप्रिय हुयी, **जैसे-** रोमनोफ (रूस), हैप्सबर्ग (आस्ट्रिया), होहेनजोलर्न (जर्मनी), ऑटोमन (टर्की) चार राजवंश समाप्त हुए।
- नए राष्ट्रों का उदय हुआ, जैसे चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, लिथुआनिया।
- ऑस्ट्रिया का विखण्डन हो गया।
- यूरोप के बजाय अमेरिका का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ गया।
- रूसी क्रांति का आधार बना।
- तानाशाहों का उदय हुआ-
  (i) इटली = मुसोलिनी
  (ii) जर्मनी = हिटलर
  (iii) स्पेन = जनरल फ्रेंको
- राष्ट्रसंघ की स्थापना हुयी।
- औपनिवेशिक जनता में राजनैतिक जागृति उत्पन्न हुयी।

2. सामाजिक परिणाम

- बड़ी संख्या में जन-हानि, पुरुषों की संख्या में कमी जबकि महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुयी-
  (i) समाज में अनैतिकता बढ़ी।
  (ii) अवैध संतानों की संख्या बढ़ी।
  (iii) उम्र उभार की समस्या।
- नारीवादी आन्दोलन शुरू हुए, जिससे उद्योगों, नौकरियों व श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी-
  (i) अधिकारों की माँग की गई।
  (ii) मताधिकार प्रदान किया गया।
- राष्ट्रवाद की भावना का विस्तार (ऊँच-नीच की भावना गौंण हो गई।)
- यूरोपीयों की नस्लीय श्रेष्ठता की भावना समाप्त हो गई।
- बेरोजगारी में वृद्धि।
- नए आविष्कारों को प्रोत्साहन - उद्योग एवं परिवहन के क्षेत्र में।
- नए हथियारों का विकास - हवाई जहाज, पनडुब्बी, टैंक का निर्माण।
- सांस्कृतिक क्षति हुयी।
- नई राष्ट्रीय सीमाओं ने अल्पसंख्यक समुदायों को जन्म दिया।

3. आर्थिक परिणाम

- अपार धन की हानि हुयी।
- उद्योगों का युद्धोन्मुखी स्वरूप होना।
- **मुद्रास्फीति की समस्या**

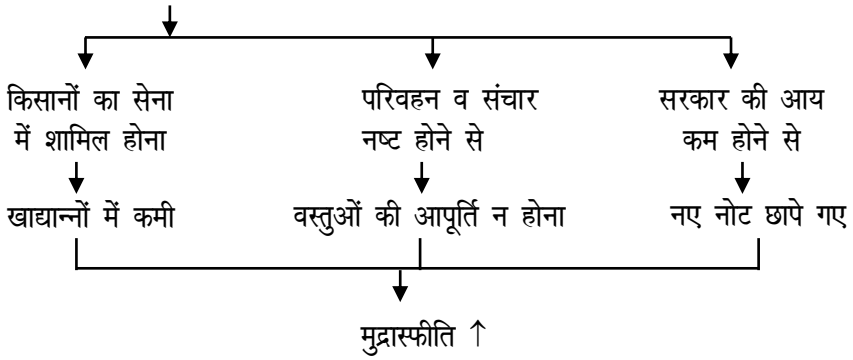

- युद्धकालीन ऋणों में वृद्धि हुयी।

  ⇓

  कर्जे चुकाने हेतु कागजी मुद्रा छापी गई।

  ⇓

  मुद्रा का मूल्य कम हो गया

  ⇓

  कई देशों ने स्वर्णमान त्याग दिया (प्रथम-ब्रिटेन)

- अमेरिका, जो युद्धपूर्व एक कर्जदार देश था, वह युद्धोपरांत दुनियां का सबसे प्रमुख कर्जदाता बन गया।
- अर्थव्यवस्था में समाजवादी तत्व उभरे।
- मजदूरों की स्थिति में सुधार हुआ, जैसे-वे श्रेणियों में गठित होकर राज्य शासन में महत्व हासिल करने लगे।
- पूँजीपतियों ने उपनिवेशों में नये-नये उद्योगों की स्थापना की अतः यह काल उपनिवेशों हेतु स्वर्णकाल तुल्य था।
- साम्यवादियों ने शासन में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया।
- 1929 ईस्वी की महान आर्थिक मंदी

  ↓

  युद्ध के दौरान ⇒ उत्पादन ↑

  ↓

  माँग ↓

  ↓

  बेरोजगारी ↑, क्रयशक्ति ↓

  ↓

  वस्तुओं की कीमतें गिरना

9 प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति एवं शान्ति सन्धियाँ

पेरिस शान्ति सम्मेलन (1919 ई.)

- युद्धोपरान्त शान्ति सन्धियों को निर्धारित करने और उनकी रूपरेखा को कार्यरूप देने हेतु फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- इसका प्रथम अधिवेशन 18 जनवरी 1919 ई. को हुआ। जिसमें मित्र राष्ट्रों एवं उनके सहयोगी देशों को मिलाकर 32 देशों को बुलाया गया लेकिन रूस व धुरी राष्ट्रों को इसमें आमन्त्रित नहीं किया गया ।

बिग फॉर (चार बडे)

1. वुडरो विल्सन
2. लायड जॉर्ज
3. क्लीमेंशू
4. ऑरलैण्डो

पेरिस की शान्ति सन्धियाँ

पेरिस सम्मेलन में विभिन्न धुरी राष्ट्रों के साथ अलग-अलग सन्धियाँ की गई थी -

- जर्मनी - वर्साय की सन्धि
- आस्ट्रिया - सैंट जरमै की सन्धि
- हंगरी - ट्रियानों की सन्धि
- बुल्गारिया - न्यूइली की सन्धि
- तुर्की - सेब्रे की सन्धि

वर्साय की सन्धि (28 जून 1919 ई.)

- जर्मनी व मित्र राष्ट्रों के बीच हस्ताक्षरित सर्वाधिक महत्वपूर्ण सन्धि। यह बहुत विस्तृत सन्धि थी जिसमें 440 धाराएँ थी।
- यह वर्साय के शीशमहल में हस्ताक्षरित की गई।
- सन्धि की शर्तों के निर्धारण के समय जर्मन प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया गया था।

सन्धि के प्रावधान

1. **प्रादेशिक व्यवस्थाएँ**
   - अल्सास व लारेन के प्रदेश जो जर्मनी ने 1870 ई. में लिए थे फ्रांस को वापस कर दिए ।
   - सार घाटी को 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दिया गया तथा बाद में जनमत संग्रह द्वारा इसका निर्णय होना था। यदि परिणाम जर्मनी के पक्ष में होगा तो जर्मनी वहाँ की खानें फ्रांस से खरीदेगा।
   - श्लेसविग पुनः डेनमार्क को दे दिया गया।

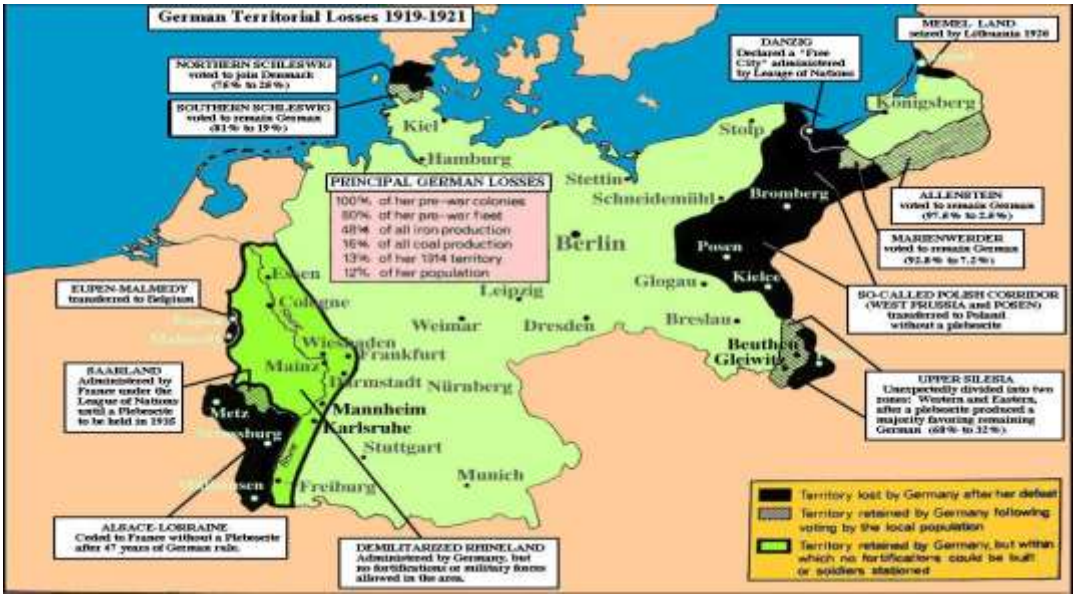

- उत्तर में स्थित मेमल बन्दरगाह लिथुआनिया को दे दिया गया।
- जर्मनी के प्रदेश मार्सनेट, यूपेन एवं मालमेदी बेल्जियम को दे दिए गए।
- डेंजिग बन्दरगाह राष्ट्रसंघ के अधीन स्वतंत्र बन्दरगाह घोषित किया गया लेकिन पोलैण्ड को यहाँ विशेषाधिकार दिया गया।
- पोलैण्ड को जर्मनी के बीचों बीच होकर बाल्टिक समुद्र तक जाने का रास्ता दिया गया जिसे ''पोलिश गलियारा'' कहा गया।
- जर्मनी व आस्ट्रिया के परस्पर विलय पर रोक लगा दी गई।
- जर्मनी के सारे उपनिवेश छीन लिए गए तथा उन्हें राष्ट्र संघ की मेण्डेट प्रणाली के तहत मित्र राष्ट्रों को सौंप दिया गया।

2. सैन्य व्यवस्थाएँ :

- जर्मनी में अनिवार्य सैनिक सेवा समाप्त कर दी गई।
- 12 वर्षों तक जर्मन स्थल सेना की संख्या 1 लाख निश्चित कर दी गई।
- जर्मन वायु सेना को भंग कर दिया गया।
- जर्मनी की नौसेना की संख्या 15000 निश्चित कर दी गई एवं पनडुब्बियो के प्रयोग पर रोक लगा दी गई।
- युद्ध सामग्री के उत्पादन एवं आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
- राइन क्षेत्र का विसैन्यीकरण कर दिया गया तथा यहाँ की किलेबन्दी को नष्ट कर दिया गया।
- होलिगोलैण्ड की किलेबन्दी नष्ट कर दी गई।

3. आर्थिक क्षतिपूर्ति की व्यवस्थाएँ

- जर्मनी पर युद्ध का समस्त उत्तरदायित्व थोपा गया तथा उस पर 5 अरब डॉलर का युद्ध हर्जाना थोपा गया।
- जर्मनी से 10 वर्ष तक फ्रांस व इटली को 70 लाख टन तथा बेल्जियम को 80 लाख टन कोयले की प्रतिवर्ष आपूर्ति करने हेतु कहा गया।
- उपनिवेशों में लगी जर्मनी की समस्त पूँजी जब्त कर ली गई।
- विलियम कैसर को युद्ध हेतु जिम्मेदार ठहराया गया तथा उस पर मुकदमा चलाने का निर्णय लिया गया।

वर्साय की सन्धि का मूल्यांकन

- वर्साय की सन्धि अन्यायपूर्ण, अदूरदर्शितापूर्ण तथा अवैज्ञानिक दृष्टि से की गई थी। इसका उद्देश्य भावी विश्व शान्ति न होकर प्रतिशोध की ज्वाला को शान्त करना मात्र था। जो एक सामान्य व्यक्ति की मनोवृति के तो अनुकूल थी पर राष्ट्रीय मनोवृति के नहीं क्योंकि राष्ट्रीय संघर्षो में प्रायः व्यापक दृष्टिकोण आवश्यक होता है।
- जर्मनी से वर्साय की सन्धि एकपक्षीय दृष्टिकोण की परिचायक थी। पराजितों के साथ इतने कठोर बर्ताव का इतिहास में यह पहला दृश्य था तथा स्वयं विजेता भी इसे स्वीकार करते थे। युद्ध के विजेताओं ने ही इसे अन्यायपूर्ण माना। मार्शल फौज ने इस सन्धि के विषय में कहा था कि ''यह सन्धि सन्धि नहीं 20 वर्षो के लिए युद्ध स्थगन मात्र है'' और संयोगवंश ठीक 20 वर्ष पश्चात 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।
- किसी भी सफल सन्धि के लिए पक्षकारों में सद्भाव जरूरी होता है किन्तु इस सन्धि के समय पराजितों से वार्ता नहीं की गई बल्कि उन पर इसे थोपा गया था। इस सन्धि ने एक व्यक्ति की जगह पूरे राष्ट्र को दण्डित किया गया। इस प्रवृत्ति ने हिटलर को जन्म दिया।
- सन्धि से पूर्व जिन 14 सूत्रों के आधार पर युद्ध विराम की घोषणा की गई थी उनका पालन इसमें नहीं किया गया तथा न ही अन्य आश्वासनों को पूरा किया गया। आत्म निर्णय के सिद्धान्त (किसी भी क्षेत्र के निवासी यह निर्धारित करेगें कि वे किस देश में रहेंगे) का भी पालन मित्र राष्ट्रों ने अपनी सुविधानुसार किया।

  जैसे - अल्सास-लारेन का निर्णय, श्लेसविग पर निर्णय, सार घाटी का फैसला, डेंजिग बन्दरगाह की स्वतंत्रता आदि में जनमत को ध्यान में नहीं रखा गया। आस्ट्रिया व जर्मनी का जनमत इनके परस्पर विलय के पक्ष में था लेकिन इसे नहीं माना गया। पोलैण्ड को गलियारा देते समय भी जनमत को दरकिनार कर दिया गया।
- इसी प्रकार क्षतिपूर्ति की शर्तें भी अत्यधिक कठोर एवं एकपक्षीय थी। केवल जर्मनी को ही युद्ध हेतु दोषी माना गया। जर्मनी के समस्त संसाधन छीन लिए गए जर्मन प्रदेश का 8 वाँ भाग तथा 70 लाख जनसंख्या कम हो गई। 15% कृषि योग्य भूमि तथा 10% कारखाने छिन गए। उसे अपने 2/5 भाग कोयला भण्डारों, 2/3 भाग लौह भण्डारों, 7/10 भाग जस्ता भण्डारों तथा आधे से अधिक सीसा भण्डारों से हाथ धोना पडा। इसके बावजूद यह उम्मीद की गई कि वह क्षतिपूर्ति भी भरे। इसलिए ही कालान्तर में ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने कहा था कि इतिहास इस लेन-देन को पागलपन करार देगा।
- किन्तु इस सन्धि को पूर्णतया नकारना भी अनुचित होगा। कुछ सीमा तक इसका औचित्य भी था। जैसा कि लॉयड जार्ज ने कहा ''जो राष्ट्र अकारण ही आक्रान्ता बन जाये उसे सबक सिखाना भी आवश्यक होता है'' यदि जर्मनी इस युद्ध में विजयी होता तो वह मित्र राष्ट्रों पर शायद इससे भी अधिक कठोर सन्धि थोपता जिसकी बानगी धुरी राष्ट्रों द्वारा 1918 ई. में रूस के साथ की गई 'ब्रेस्ट लिटोवस्क' की सन्धि में नजर आती है।
- सन्धि की कठोरता का अन्य कारण मित्र राष्ट्रों पर वहाँ की जनता का दबाव भी था। मित्र राष्ट्रों की जनता में जर्मनी के विरूद्ध नफरत, घृणा तथा विद्वेष अपने चरम पर था। सभी लोग बदले की भावना से भरे हुये थे तथा नेताओं पर जर्मनी से बदला लेने का दबाव था। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उन्हें अपनी जनता के कोपभाजन का शिकार होना पडता, इसलिए यह उनकी बाध्यता थी।
- किन्तु इन तमाम तर्को के बावजूद वर्साय की सन्धि को न्यायोचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि मजबूरी किसी न्यायोचितता का आधार नहीं हो सकती। हम किसी अन्य की गलती का उदाहरण देकर अपनी गलती को सही नहीं ठहरा सकते।
- वर्साय की सन्धि ने जर्मनी के गणतंत्र को अपमानित किया और वहाँ लोकतांत्रिक व्यवस्था नहीं पनप सकी। सन्धि पर हस्ताक्षर करने के कारण वाइमर गणतंत्र समाप्त हो गया तथा वहाँ हिटलर जैसा तानाशाह पनपा। द्वितीय विश्व युद्ध वर्साय की सन्धि का ही परिणाम था।
- जब द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात विजेता राष्ट्रों ने पराजितों से प्रतिशोध के स्थान पर पुनर्निर्माण एवं सहयोग की भावना से कार्य किया तो युद्ध के दौरान उत्पन्न घृणा व द्वेष भी शीघ्र ही सौहार्द में बदल गया।

वर्साय की सन्धि का महत्व

- नये राष्ट्रों का उदय हुआ।
- जनमत को महत्व देने की बात को सिद्धान्ततः स्वीकार किया गया।
- राष्ट्र संघ की स्थापना -राष्ट्र संघ की स्थापना का प्रावधान वर्साय की सन्धि की प्रथम 26 धाराओं के अन्तर्गत ही किया गया था।

10 द्वितीय विश्वयुद्ध

द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण [1939 – 1945 ईस्वी]

1. वर्साय की अपमानजनक संधि
2. फ्रांस की प्रतिशोध की भावना
3. आर्थिक मंदी
4. तानाशाहों का उदय
5. ब्रिटेन की तुष्टिकरण की नीति
6. राष्ट्रसंघ की असफलता
7. हथियारों की दौड़
8. स्पेन का गृहयुद्ध
9. अल्पसंख्यकों की समस्या
10. **तात्कालिक कारण**

- 1935 ईस्वी में जर्मनी में अनिवार्य सैनिक सेवा लागू।
  - ➢ राइनलैण्ड का सैन्यीकरण।
  - ➢ इटली द्वारा इथोपिया पर अधिकार करना।
- 1936 ईस्वी में 'एण्टीकामिण्टर्न पैक्ट' (साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए रूस के विरूद्ध जर्मनी व जापान के मध्य यह पैक्ट हुआ।)
- 1937 ईस्वी में एण्टीकामिण्टर्न पैक्ट में इटली भी शामिल हो गया।
- 1938 ईस्वी में आस्ट्रिया का जर्मनी में विलय, सुडेटनलैण्ड की माँग की गई।
- 30 सितम्बर, 1938 ईस्वी में म्यूनिख समझौता

हिटलर (जर्मनी) मुसोलिनी (इटली) चेम्बरलेन (ब्रिटेन) दलादियर (फ्रांस)

परिणाम ⇒ सम्पूर्ण चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी का अधिकार हो गया।

- 1939 ईस्वी में हिटलर व रूस में समझौता

⇓

पोलैण्ड को आपस में बाँटने पर स्वीकृति दी गई।

- डेंजिग बन्दरगाह व पोलिश गलियारे की माँग, जिसे पोलैण्ड ने ठुकरा दिया, अतः 1 सितम्बर, 1939 ईस्वी को जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटेन व फ्रांस की चेतावनी की अवहेलना करने पर इन दोनों ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम

(i) जन-धन की अपार क्षति

(ii) युद्ध की रीति-नीति में परिवर्तन

- वायुसेना का महत्व
- विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग
- परमाणु बमों का प्रयोग (हिरोशिमा व नागासाकी पर)

(iii) शक्ति संतुलन के स्थान पर आतंक का संतुलन

⇓

आतंक का संतुलन से शांति स्थापना हुयी।

दुष्परिणाम : यह काफी भयावह, डरावना, जोखिमपूर्ण था, चूँकि छोटी-सी गलतफहमी पूर्ण विनाश का कारण बन सकती थी।

(iv) **संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना**

- वैश्विक विवादों को शांति पूर्ण हल करने हेतु स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय मंच।
- 1945 ईस्वी के सेन-फ्रांसिस्को सम्मेलन में इसे अंतिम रूप दिया गया।

⇓

24 अक्टूबर, 1945 ईस्वी को UNO विधान लागू हुआ।

(v) **यूरोप का प्रभुत्व पूर्णतः समाप्त**

यूरोप के स्थान पर अमेरिका व सोवियत संघ के हाथों में विश्व राजनीति का नेतृत्व चला गया।

(vi) **साम्यवाद की लोकप्रियता में वृद्धि**

- रूस का विश्व शक्ति के रूप में उभरना।
- 1949 ईस्वी में चीन में साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना।
- वियतनाम, कोरिया एवं पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवाद की स्थापना।

(vii) दो विचारधाराओं में विभाजित समाज

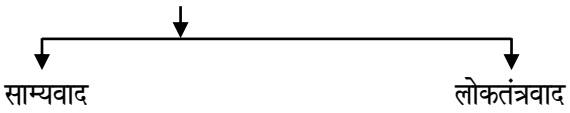

(viii) सर्वसत्तावादी शासन की स्थापना पर बल

⇓

विजयी सरकारें आर्थिक संकट से नहीं बचा पायी

⇓

राजनीतिक पार्टियों की स्थापना, जो राज्य की सुरक्षा के बजाय विचारधारा के प्रति अधिक आग्रहशील थी।

⇓

राष्ट्रविरोधी शक्ति का दमन करने हेतु राष्ट्रीय सरकारों द्वारा शक्तियों व अधिकारो की आवश्यकता महसूस करना

⇓

सर्वसत्तावादी शासन

(ix) शीतयुद्ध का आरम्भ

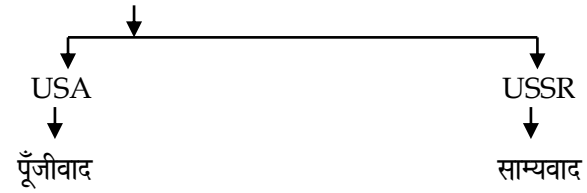

शीतयुद्ध – सशस्त्र संघर्ष के न होते हुए भी दो पक्षों के बीच आरोपों, प्रत्यारोपों एवं परस्पर विरोधी राजनैतिक प्रचार का तुमुल युद्ध, जो वैचारिक स्तर पर लड़ा जाता है।

(x) राष्ट्रों का विचारधारा के आधार पर विभाजन

अब विभिन्न राष्ट्र भी विचारधारा के आधार पर बड़े संगठनों में संगठित होने लगे, जैसे- साम्यवादी विचारधारा के अनुयायी राष्ट्र रूस के साथ संगठन बनाने लगे।

(xi) प्रादेशिक संगठनों का विकास

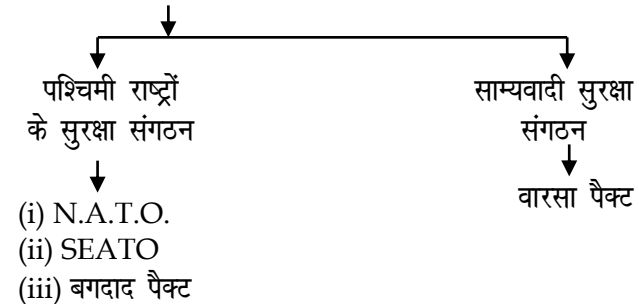

(xii) औपनिवेशिक साम्राज्यों का अंत

- युद्ध के कारण उपनिवेशों में राष्ट्रवादी चेतना का विकास हुआ।
- अटलाण्टिक चार्टर में मित्र राष्ट्रों द्वारा युद्ध का उद्देश्य लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा करना बताया गया था।

⇓

साम्राज्यवादी देशों पर नैतिक दबाव उत्पन्न हुआ।

- 1960 ईस्वी तक एशिया व अफ्रीका के लगभग सभी देश स्वतंत्र हो गए।

(xiii) गुट निरपेक्ष आन्दोलन

शीतयुद्ध में बढ़ती गुटबंदी के चलते नव संप्रभु राष्ट्रों ने निरपेक्ष रहने हेतु गुट निरपेक्ष आन्दोलन शुरू किया।